RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर
श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-12 अंक:265 ता. 12 अप्रेल 2024, शुक्रवार, कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

पहला कॉलम

लश्कर-ए-तैयबा के 3 सहयोगी गिरफ्तार

कश्मीर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने बारामूला जिले में लश्कर-ए-तैयबा के तीन आतंकवादी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि उन्हें खुफिया जानकारी मिली थी कि लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े कुछ आतंकवादी सुरक्षाबलों को निशाना बनाने के इरादे से बारामूला शहर में घूम रहे हैं। इसी के आधार पर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। तीनों की पहचान ओवैस अहमद वाजा, बासित फयाज कालू और फहीम अहमद मीर के रूप में हुई है। तीनों युवक आतंकियों को सुरक्षाबलों की गतिविधियों की जानकारी देते थे। इनके पास से तीन हैंड ग्रेनेड भी बरामद हुए हैं। उनके खिलाफ यूए(पी)एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

होम वोटिंग से पहले 63 लोगों की मौत

जयपुर । राजस्थान में लोकसभा के पहले चरण के चुनाव में जयपुर शहर और जयपुर ग्रामीण के लिए 19 अप्रैल को ईवीएम पर वोट डाले जाएंगे। लेकिन इससे पहले बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाता, जिन्होंने होम वोटिंग का विकल्प चुना है, उनकी वोटिंग की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। अब तक करीब 96 फीसदी रजिस्टर्ड मतदाता वोट कर चुके है, जबकि करीब 0.82 फीसदी यानी 63 मतदाता ऐसे है, जिनकी वोटिंग तारीख से पहले मौत हो गई है। जयपुर जिला निर्वाचन विभाग से मिली रिपोर्ट के अनुसार तो जयपुर शहर और जयपुर ग्रामीण सीट पर कुल रजिस्टर्ड 7 हजार 601 वोटर में से 7 हजार 282 वोटर ने घर बैठे पोस्टल बैलट के जरिए वोट किया है। इन दोनों सीटों में 16 विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इनमें बानसूर ऐसी विधानसभा है, जहां 100 फीसदी वोटिंग हो चुकी है। बानसूर में 159 वोटर्स ने होम वोटिंग का विकल्प चुना था और सभी वोटर्स अपना वोट दे चुके हैं।

स्कूल बस पलटी, 6 की मौत

महेंद्रगढ़ । हरियाणा के महेंद्रगढ़ में गुरुवार सुबह प्राइवेट स्कूल की तेज रफ्तार बस पलट गई। हादसे में 6 बच्चों की मौत हो गई, जबकि 22 बच्चे घायल हुए हैं। इनमें से 2 की हालत गंभीर है। महेंद्रगढ़ के कस्बा कनीना में स्थित त्ररु पब्लिक स्कूल ईद पर छुट्टी के बाद भी खुला था। गुरुवार सुबह बस करीब 35 बच्चों को लेकर स्कूल जा रही थी। इस बीच गांव उन्हानी के पास हादसा हो गया। 5 बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 1 ने अस्पताल में दम तोड़ा। हादसे में मरने वाले बच्चों की पहचान सत्यम (16), युवराज (14), दो सगे भाई यशु व अंशु, वंश (14) और रिकी (15) के रूप में हुई है। इनमें से 4 एक ही गांव झाड़ली के हैं।

पान मसाला, गुटखा के निर्माताओं को जीएसटी से राहत

नई दिल्ली । केंद्र सरकार ने पान मसाला, गुटखा और इसी तरह के तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं के पंजीकरण और मासिक रिटर्न दाखिल करने के लिए विशेष प्रक्रिया के कार्यान्वयन की समय सीमा 15 मई तक बढ़ा दी है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने इससे पहले नई पंजीकरण और मासिक रिटर्न दाखिल प्रक्रिया एक अप्रैल 2024 से क्रियान्वित करने की जनवरी में घोषणा की थी। इसके बाद व्यवसायों के पंजीकरण, रिकॉर्ड रखना और मासिक जानकारी में आमूलचूल बदलाव के कदम का मकसद पान मसाला और तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं के जीएसटी अनुपालन में सुधार करना था। वित्त विधेयक 2024 के जरिए जीएसटी कानून में भी संशोधन किया गया। इसमें कहा गया कि पान मसाला, गुटखा और इसी तरह के तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं को एक लाख रुपये तक का जुर्माना देना होगा, यदि वे एक अप्रैल से अपनी पैकिंग मशीनरी को जीएसटी अधिकारियों के साथ पंजीकृत करने में विफल रहते हैं। सीबीआईसी ने एक अधिसूचना के जरिए इस विशेष प्रक्रिया के कार्यान्वयन की तारीख 45 दिन बढ़ाकर 15 मई तक कर दी है।

मस्क का टवीट, पीएम मोदी के साथ बैठक की प्रतीक्षा कर रहा हूं!

22 अप्रैल के बाद दिल्ली आ सकते है

मुंबई । टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने अपनी भारत यात्रा की घोषणा की है। स्पेसएक्स के सीईओ ने कहा, भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक की प्रतीक्षा कर रहा हूं! मस्क के पोस्ट को अब तक 38 मिलियन से अधिक बार देखा जा चुका है। उनकी इस घोषणा का कई एक्स यूजर्स ने स्वागत किया है। उन्होंने लिखा, भारत में आपका स्वागत है, एलन, जबकि एक ने नमस्ते इंडिया लिखा। एक अन्य यूजर ने लिखा, भारत में आपका स्वागत है, मस्क, आपकी कंपनियों और भारत के बीच दीर्घकालिक साझेदारी की उम्मीद है। दूसरे ने कहा,हां! आखिरकार आपको यहां पाकर उत्साहित हूं। आशा है कि टेस्ला इंडिया जल्द ही चालू हो जाएगी और लोगों को उनकी टेस्ला मिल जाएगी। कहा जा रहा है कि मस्क 22 अप्रैल के बाद नई दिल्ली में पीएम मोदी से मुलाकात कर सकते है। इस दौरान मस्क अपनी निवेश योजनाओं और देश में 2-3 बिलियन डॉलर के विनिर्माण संयंत्र की स्थापना की घोषणा भी कर सकते हैं। खबरों के मुताबिक ईवी का निर्माण शुरू करने और वाहनों का निर्यात करने के लिए गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु टेस्ला की प्राथमिकता में हैं।

धूमधाम से मनाई ईद,राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री ने दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली। (एजेंसी)

देशभर में गुरुवार सुबह ईद उल फितर का त्यौहार हर्षोल्लास से मनाया । ईद पर मुस्लिम समाज के लोगों ने ईदगाह में ईद की नमाज अदा कर अमन की दुआ मांग रहे हैं और फिर एकदूसरे को गले लगाकर बधाई देते नजर आ रहे हैं। जहां बुधवार शाम भारत में ईद के चांद का दीदार हुआ और लोगों ने एक दूसरे को गले लगाकर ईद की बधाई दी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सभी देशवासियों को ईद की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर कहा, मैं सभी देशवासियों, विशेष रूप से मुस्लिम भाइयों और बहनों को ईद-उल-फ़ित्र की मुबारकबाद देती हूँ।

रमजान के पावन महीने के बाद मनाये जाने वाले इस पर्व से एकता, सद्भाव और भाईचारे की भावना का संचार होता है। खुशियां बांटने का यह त्योहार क्षमा और दान करने की प्रेरणा देता है। मैं इस पवित्र अवसर पर कामना करती हूँ कि हमारा देश निरंतर प्रगति के मार्ग पर बढ़े और सब देशवासी सदा अमन-चैन से रहें। ईद के मौके पर पीएम मोदी ने अपने सोशल मीडिया पर आपसी भाईचारे को बढ़ने की कामना की। इसके साथ ही उन्होंने लिखा कि ये त्योहार एकजुटता और शांति की भावना फैलाए। पीएम मोदी ने सभी लोगों की खुशी और स्वस्थ रहने की भी कामना की।

मुख्तार अब्बास नकवी ने पढ़ी नमाज

पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कश्मीरी गेट स्थित पंजा शरीफ दरगाह में नमाज अदा की। उन्होंने देश में अमनचैन और खुशहाली की दुआ मांगी। इसके अलावा दिल्ली में ईद-उल-फितर से पहले हज़रत निज़ामुद्दीन दरगाह को सजाया गया। बाजार में भारी भीड़ उमड़ी। वहीं, ईद-उल-फितर के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। ईद-उल-फितर के मौके पर नमाज अदा करने के लिए जामा मस्जिद में श्रद्धालु इकट्ठा हुए। नमाज के बाद लोग एक दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई दी। ईद-उल-फितर के मौके पर दिल्ली की जामा मस्जिद में नमाज अदा करने के बाद जश्न मनाते हुए बच्चे गले मिले। प्यार और भाईचारे का पैगाम इन मासूम बच्चों ने एकदूसरे को गले लगाकर दी।

राजस्थान के अनूपगढ़ में राहुल गांधी ने कहा

मोदी ने 16 लाख करोड़ रुपए अरबपतियों को दिए, उतना हम गरीब-पिछड़ों को देंगे

अनूपगढ। (एजेंसी)

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने राजस्थान में अनूपगढ़ में चुनावी सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान की 200 सबसे बड़ी कंपनियों के मालिक और सीनियर मैनेजमेंट में पिछड़े वर्ग के लोग नहीं हैं। मोदी ने इन कंपनियों के 16 लाख करोड़ रुपए माफ किए हैं। हिंदुस्तान के 25-30 अमीर लोगों का इतना पैसा माफ कर दिया, जितना 24 साल तक मनरेगा के जरिए मजदूरों को मिलता। राहुल गांधी ने कहा कि जितना पैसा मोदी ने अरबपतियों को दिया है, चुनाव जीतने के बाद हम गरीब, पिछड़ों, आदिवासियों, दलितों को देंगे। लोग कहते हैं कि इससे आदत बिगड़ेगी, लेकिन कोई यह बताए कि जब मोदी अमीरों के पैसे माफ करते हैं तो उनकी आदत नहीं बिगड़ती क्या? मेरे दिमाग में 16 लाख करोड़ का नंबर है, मैं उसे देखकर चल रहा हूं।

सरकारी नौकरी में ठेका प्रथा बंद होगी

राहुल गांधी ने कहा कि 30 लाख सरकारी पोस्ट को नरेंद्र मोदी ने खाली रखा अपने 20-25 लोगों की मदद करने के लिए। हम 30 लाख सरकारी रोजगार लोगों को देंगे। सरकार और पीएसयू में ठेकेदारी प्रथा बंद होगी। सरकार की संस्थाओं में काम करने वालों को परमानेंट नौकरी दी जाएगी। राहुल गांधी ने कहा कि हमारी सरकार आएगी तो किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य का कानून लागू करेंगे। अगर नरेंद्र मोदी कर्जा माफ कर सकते हैं तो कांग्रेस फिर से किसानों का कर्जा माफ करके दिखाएगी। राहुल गांधी ने कहा कि सेना गारंटी देती थी कि यदि आप शहीद हुए तो परिवार को मुआवजा मिलेगा, कैंटीन मिलेगी, पेंशन मिलेगी। नरेंद्र मोदी ने अग्निवीर स्कीम लाकर भरोसा तोड़ा है। ये आर्मी ने नहीं कहा कि हमें अग्निवीर चाहिए, ये पीएम ऑफिस से लागू हुई है। जैसे ही सरकार आएगी, अग्निवीर योजना

रद्द कर देंगे। पहले जैसी सुविधाएं देंगे।

हर महीने 8500 रुपए महिलाओं को देंगे

राहुल गांधी ने कहा कि हिंदुस्तान के हर गरीब परिवार की एक महिला को हमारी सरकार साल का एक लाख रुपए बैंक अकाउंट में डालेगी। हर महीने 8500 रुपए सरकार उस दिन तक देगी, जब तक कि आप गरीबी रेखा से बाहर न आ जाएं। यदि आप गरीबी रेखा के नीचे हो, आपके बैंक अकाउंट में हर महीने 8500 रुपए आते रहेंगे। एक झटके में हिंदुस्तान से हम गरीबी को मिटा देंगे।

राहुल गांधी वायनाड में आतंकी संगठन के साथ मिलकर लड़ रहे चुनाव-स्मृति ईरानी

अमेठी । (एजेंसी)

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर लगातार हमलावर हैं। उन्होंने सनसनीखेज आरोप लगाते हुए कहा कि राहुल गांधी आतंकी संगठन के साथ मिलकर वायानाड का चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि 50 साल तक एक छत्र राज कांग्रेस का अमेठी में था लेकिन कांग्रेस ने गरीबों के लिए शौचालय तक नहीं बनवाया। कांग्रेस चाहती थी कि गरीब हमेशा गरीब ही रहें और अमीरों के आगे हमेशा हाथ फैलाता रहे। गुरुवार को यहां अमेठी के मेदन मवई में आयोजित कार्यक्रम के बाद कहा कि राहुल गांधी ने वायनाड से नामांकन के दौरान लिखकर घोषित किया कि वायनाड हमारा घर है। जब वह राहुल गांधी का घर है तो अमेठी क्या है? कहा कि मैंने लोगों को रंग बदलते देखा है। परिवार बदलते पहली बार राहुल गांधी को देखा है। राहुल गांधी आतंकी संगठन के साथ मिलकर वायानाड का चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस लगातार यहां सत्ता में रही लेकिन कांग्रेस ने कुछ नहीं किया। उन्होंने सरकार की नीतियों पर प्रकाश डाला। कहा कि आज 4 लाख 20 हजार किसानों को अमेठी लोकसभा में 6 हजार रुपए सालाना मिल रहा है। पांच सालों में 1 लाख 14 हजार गरीबों के आवास बनवाए जा रहे हैं। अमेठी लोकसभा में 19 लाख लोगों को राशन मिला है साथ ही चार लाख से ज्यादा परिवारों को शौचालय मिला है। उन्होंने आरोप लगाया कि 50 साल तक एक छत्र राज कांग्रेस का अमेठी में था लेकिन कांग्रेस ने गरीबों के लिए शौचालय तक नहीं बनवाया। कांग्रेस चाहती थी कि गरीब हमेशा गरीब ही रहें और अमीरों के आगे हमेशा हाथ फैलाता रहे।

मप्र में बारिश के साथ गिरे ओले, 8 राज्यों में झमाझम

जम्मू-हिमाचल में स्नो फॉल, राजस्थान-यूपी और गुजरात में तापमान 40 डिग्री के पार ओलावृष्टि-बारिश से फसलें तबाह

-रतलाम, सागर और छिंदवाड़ा में बरसा पानी; इंदौर, भोपाल में छाए बादल

नई दिल्ली/भोपाल ।

बेमौसम बारिश और ओला गिरने से कई राज्यों में फसलों को नुकसान पहुंचा है। मप्र के अलग-अलग जिलों में हुई बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि के कारण खरीदी केन्द्रों पर गेहूं भीगने की खबरें सामने आई हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि किसी भी जिले में जनहानि, पशुहानि या किसी प्रकार का नुकसान होगा तो सरकार उसके प्रति गंभीर रहेगी। उसकी क्षतिपूर्ति करने के लिए मुआवजा दिया जाएगा, प्रदेश सरकार इसके लिए संकल्पित है। एक तरफ जहां देश में बारिश के दौर से तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। वहीं, कुछ इलाके ऐसे भी है जहां तेज गर्मी का असर देखने को मिल रहा है। मौसम विभाग ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में तापमान 40 से 43 डिग्री के बीच रिकॉर्ड किया गया है।

मप्र में गुरुवार को भी मौसम बदल गया। रतलाम, सागर और छिंदवाड़ा में बारिश हुई। कई जिलों सुबह से बादल छाए रहे। पिछले 3-4 दिनों से कई जिलों में बारिश-ओले गिरने से तापमान में भी गिरावट देखी गई। मौसम विभाग ने भोपाल-इंदौर समेत 31 जिलों में भी गरज-चमक, ओले, बारिश और आंधी चलने की संभावना जताई है। नर्मदापुरम-बैतूल जिले के लिए रेड अलर्ट जारी किया गया है। यहां 60 किलोमीट प्रति घंटे की स्पीड से आंधी चल सकती है। रतलाम जिले में सुबह से बादल छाए रहे। दोपहर में अचानक मौसम बदला और तेज हवाओं के साथ बारिश होने लगी। रतलाम शहर में सडकें तरबतर हो गई। जिले के बाजना में भी जमकर पानी गिरा। सागर जिले में गरज-चमक के साथ बारिश हुई और ओले गिरे।

केंद्र सरकार किसानों के संदर्भ में बड़े फैसले करने जा रही है: राजनाथ सिंह

रीवा । (एजेंसी)

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि केंद्र सरकार किसानों के संदर्भ में बड़े फैसले करने जा रही है। सवा सौ करोड़ की लागत से देश में लगभग 700 गोदाम बनाए जाएंगे। किसान इसमें अपनी उपज को रख सकेंगे और दाम बढ़ने पर बेच भी सकेंगे। जब वे अपनी उपज को गोदाम में रखेंगे तो उन्हें कुछ राशि भी मिल जाएगी। देश में गरीबों की स्थिति में आए बदलाव का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि बीते 10 साल में देश के लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। केंद्र सरकार गरीबों को मुफ्त राशन दे रही है वह 2029 तक मिलता रहेगा। इसके साथ ही राजनाथ सिंह ने कहा है कि भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदल रहा है। मध्य प्रदेश के रीवा संसदीय क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार जनार्दन मिश्रा के समर्थन में देवतालाब में आयोजित जनसभा में रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि दुनिया में भारत के प्रति धारणा बदल गई है और आने वाले वर्षों में भारत दुनिया की महाशक्ति बन जाएगा। उन्होंने राम मंदिर को लेकर कहा कि भाजपा अपने घोषणापत्र में इसके बारे में लगातार कहती आई है और आज भगवान राम का मंदिर भी अयोध्या में बन गया है। यह राम राज्य आने का संकेत है। राम राज्य का अर्थ है जब लोगों में अधिकार नहीं बल्कि कर्तव्य बोध हो। हम लोगों ने धारा 370 खत्म करने की बात की थी वह भी खत्म हो गई। तीन तलाक खत्म करने की बात कही थी उस पर अमल किया गया है।

अनिल अंबानी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका

रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर को चुकाने होंगे 8000 करोड़ रुपए

नई दिल्ली । (एजेंसी)

सुप्रीम कोर्ट ने अनिल अंबानी से जुड़े अपने ही तीन साल पुराने उस फैसले को दरकिनार कर दिया। इसमें दिल्ली मेट्रो के साथ विवाद में अनिल अंबानी ग्रुप की कंपनी रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर को 8,000 करोड़ रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया था। शीर्ष कोर्ट ने कंपनी को पहले ही मिल चुके लगभग 2,500 करोड़ रुपये को वापस वसूल करने के लिए कहा। साथ ही माना कि पिछले फैसले के कारण न्याय नहीं हो सका था। वर्ष 2021 के फैसले के खिलाफ दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन की क्यूरेटिव पिटिशन को अनुमति देते हुए चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली एक बेंच ने कहा कि दिल्ली हाईकोर्ट की खंडपीठ का आदेश एक सुविचारित निर्णय था। साथ ही माना कि सुप्रीम कोर्ट के लिए इसमें हस्तक्षेप करने का कोई वैध आधार नहीं था

नहीं हो सका था न्याय

पीठ ने कहा कि इस न्यायालय की दो-जजों की पीठ के फैसले में न्याय नहीं हो सका। शीर्ष अदालत ने कहा कि खंड पीठ के फैसले को रद्द करते हुए इस अदालत ने एक स्पष्ट रूप से अवैध आदेश को बहाल कर दिया। इसने एक सार्वजनिक इकाई पर अत्यधिक दायित्व थोप दिया। मध्यस्थता न्यायाधिकरण के आदेश के अनुसरण में डीएमआरसी द्वारा रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर फर्म को भुगतान की गई राशि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी को वापस करनी होगी।

सुप्रीम कोर्ट ने कैंसिल किया था हाईकोर्ट का ऑर्डर

शीर्ष अदालत ने 9 सितंबर, 2021 को डीएमआरसी के खिलाफ लागू होने वाले 2017 के मध्यस्थता न्यायाधिकरण के आदेश को बरकरार रखा था। इसने दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश को कैसिंल कर दिया था।

मध्यस्थता न्यायाधिकरण के आदेश के अनुसार, रियायत समझौते के संदर्भ में 2782.33 करोड़ रुपये और ब्याज का हकदार था। 14 फरवरी 2022 तक यह रकम बढ़कर 8,009.38 करोड़ रुपये हो गई।

वायनाड में सुल्तान बाथेरी का नाम बदलकर गणपतिवट्टोम कर दिया जाना चाहिए- के सुरेंद्रन

कोझिकोड । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज कहा कि वायनाड लोकसभा क्षेत्र में आने वाले सुल्तान बाथेरी शहर का नाम बदल कर गणपतिवट्टोम कर दिया जाना चाहिए क्योंकि दो दशक पहले केरल के मालाबार में मैसूर के पूर्व शासक टीपू सुल्तान के आक्रमण से पहले इसका नाम गणपतिवट्टोम ही था। यह मुद्दा भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष के सुरेंद्रन ने उठाया। सुरेंद्रन का वायनाड लोकसभा सीट पर मौजूदा सांसद और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ चुनावी मुकाबला है। इस सीट से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की नेता और सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) की उम्मीदवार एनी राजा भी चुनाव मैदान में हैं। भाजपा नेता ने यहां के निकट थमरस्सेरी में मीडिया से कहा कि सुल्तान बाथेरी का असली नाम गणपतिवट्टोम है। इसलिए नाम बदला जाना जरूरी है। भाजपा नेता ने अपने चुनाव अभियान के दौरान टीपू सुल्तान के मालाबार पर आक्रमण का जिक्र किया और आरोप लगाया कि कांग्रेस और एलडीएफ इसे सुल्तान बाथेरी के रूप में ही संदर्भित करना पसंद करते हैं। सुरेंद्रन ने कहा कि केरल में किसी जगह का नाम आक्रमणकारी के नाम पर क्यों रखा जाना चाहिए? केरल के पर्यटन विभाग का कहना है कि सुल्तान बाथेरी को पहले गणपतिवट्टोम के नाम से ही जाना जाता था।

श्रीनगर सीट से चुनाव लड़ने को तैयार उमर अब्दुल्ला

श्रीनगर । जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला श्रीनगर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव लड़ने वाले हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस सूत्रों ने कहा कि उमर अब्दुल्ला श्रीनगर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले हैं, जबकि पूर्व मंत्री और पार्टी के वरिष्ठ नेता चौधरी मोहम्मद रमजान उत्तरी कश्मीर बारामूला सीट से चुनाव मैदान में उतरने को तैयार है। एनसी ने पहले ही अनंतनाग-राजौरी निर्वाचन क्षेत्र से अपने उम्मीदवार, वरिष्ठ गुज्जर/बकरवाल नेता, मियां अल्ताफ अहमद की घोषणा कर दी है। उधर, पूर्व मुख्यमंत्री और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने भी अनंतनाग-राजौरी निर्वाचन क्षेत्र से लड़ने के अपने फैसले की घोषणा की है। पीडीपी ने अपनी युवा शाखा के अध्यक्ष वहीद पारा को श्रीनगर से और पूर्व राज्यसभा सदस्य फैयाज अहमद मीर को बारामूला सीट से मैदान में उतारा है। बीजेपी ने अभी तक कश्मीर की तीन लोकसभा सीटों के लिए अपने उम्मीदवारों की घोषणा नहीं की है। पार्टी ने कठुआ-उधमपुर से राज्य मंत्री (पीएमओ) डॉ. जितेंद्र सिंह और जम्मू-रियासी सीट से जुगल किशोर शर्मा को मैदान में उतारा है। एनसी और कांग्रेस ने चुनाव के लिए गठबंधन किया है, जिसमें एनसी जम्मू-रियासी और कठुआ-उधमपुर सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवारों का समर्थन करेगी, जबकि कांग्रेस कश्मीर में तीन सीटों पर एनसी के खिलाफ अपने उम्मीदवार नहीं उतारेगी। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस (पीसी) के सज्जाद गनी लोन बारामूला निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।

भारत में एक्स में आई तकनीकी खराबी....यूजर्स साइट को एक्सेस नहीं कर पा रहे

मुंबई । एलन मस्क के स्वामित्व वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स में तकनीकी खराबी आ गई है। कुछ यूजर्स को साइट को एक्सेस में दिक्कत हो रही है। यूजर्स ने रिपोर्ट किया है कि उन्हें प्लेटफॉर्म को एक्सेस करने में परेशानी हो रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक एक्स के डाउन होने की शुरुआत गुरुवार को सुबह 10-41 सुबह से शुरू हुई। डाउनटाइम के दौरान एक्स ने कुछ यूजर्स के लिए पूरी तरह काम करना बंद कर दिया। इस दौरान यूजर्स पोस्ट शेयर नहीं कर पा रहे हैं और काफी लोगों को पेज ओपन करने में भी दिक्कत हो रही है। आउटेज मैप के मुताबिक, यूजर्स को दिल्ली, जयपुर, लखनऊ, कटक, अहमदाबाद, मुंबई, हैदराबाद, बेंगलुरु और कई शहरों में हॉटस्पॉट के साथ पूरे भारत से एक्स को लेकर समस्याओं की रिपोर्ट करते हुए पाया गया। हालांकि, एक्स अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में ठीक तरह से काम कर रहा है। इससे पहले एक्स को दिसंबर 2023 में बड़ी रुकावट का सामना करना पड़ा था। उस दौरान प्लेटफॉर्म दुनिया भर के यूजर्स के लिए बंद हो गया था।

फोन टैपिंग मामले में पूर्व डीसीपी गिरफ्तार, अपहरण और जबरन वसूली का मामला दर्ज

हैदराबाद। पुलिस ने फोन टैपिंग मामले में गिरफ्तार एक पूर्व पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) पर अब एक व्यवसायी की शिकायत के आधार पर अपहरण और जबरन वसूली का मामला दर्ज किया है। शिकायतकर्ता ने कहा है कि 2018 में उसका अपहरण हुआ था और तब उसे धमकी देकर अपनी कंपनी अपने बिजनेस पार्टनर को सौंपने को कहा गया था। आठ अप्रैल को दर्ज कराई गयी एक पुलिस शिकायत में, एक स्वास्थ्य सेवा कंपनी की स्थापना करने वाले व्यवसायी ने कहा था कि उसके अपहरण के लिए कंपनी के चार अंशकालिक निदेशकों और हैदराबाद पुलिस की एक शाखा 'कमिश्नर टास्क फोर्स' के पूर्व डीसीपी राधा किशन राव के साथ मिलीभगत हुई थी। शिकायत में कहा गया है कि तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने उन पर अपनी कंपनी के 100 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर चार निदेशकों को हस्तांतरित करने के लिए दबाव डाला था। पूर्व डीसीपी को फोन टैपिंग मामले की चल रही जांच के तहत और कथित तौर पर कुछ कंप्यूटर सिस्टम एवं आधिकारिक डेटा नष्ट करने के आरोप में 29 अप्रैल को गिरफ्तार किया गया था। व्यवसायी की शिकायत के आधार पर, जुबली हिल्स पुलिस स्टेशन में पूर्व डीसीपी, दो पुलिसकर्मियों, चार निदेशकों और अन्य के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 365 (अपहरण), 386 (जबरन वसूली), 341 (गलत तरीके से रोकना) और धारा 120बी (आपराधिक साजिश) के तहत मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने कहा कि आगे की जांच जारी है। प्राथमिकी के अनुसार, हेल्थकेयर कंपनी के चार अंशकालिक निदेशकों ने कंपनी में व्यवसायी की 60 प्रतिशत हिस्सेदारी कम कीमत पर उन्हें (निदेशकों को) बेचने का दबाव डाला। शिकायतकर्ता ने कहा कि राव की गिरफ्तारी के बाद ही उसने हैदराबाद शहर पुलिस को इस घटना की सूचना दी और उनसे इन मामलों की गहन जांच करने का आग्रह किया।

काशी विश्वनाथ धाम में नो टच पॉलिसी लागू

वाराणसी । वाराणसी के काशी विश्वनाथ धाम परिसर में नो टच पॉलिसी लागू की गई है। इसके साथ ही यहां पुलिसकर्मी अब भक्तों की तरह ही धोती-कुर्ता पहनकर मंदिर परिसर की सुरक्षा करेंगे। ऐसा ही प्रयोग कुछ साल पहले 2018 में भी किया गया था। मंदिर अधिकारियों के मुताबिक पुरुष सुरक्षाकर्मी भक्तों की तरह भेष धारण करने के लिए धोती कुर्ता पहनेंगे और महिला सुरक्षाकर्मी सलवार कुर्ता पहनेंगी। इस विशेष पोशाक को धारण करने से पहले इन सुरक्षाकर्मियों को 3 दिन का प्रशिक्षण लेना होगा कि कैसे मंदिर में आने वाले भक्तों से संवाद किया जाए। यह कदम भक्तों के अनुभव को सुखद बनाने के मकसद से उठाया गया है। ताकि उनके अंदर सुरक्षाकर्मियों की पोशाक से जुड़ी नकारात्मक धारणा को खत्म किया जा सके। पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने कहा कि जिस तरह से पुलिस भक्तों के साथ व्यवहार करती है उससे उन्हें ऐसा कभी नहीं लगा कि उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भक्त मंदिर के पुजारियों के समान कार्यों को अधिक स्वीकार कर रहे हैं। जब भगवान के दर्शन करने के लिए भक्त कतारों में लगते हैं। कई बार लोगों को लंबा इंतजार करना पड़ता है जिसकी वजह से वह परेशान हो जाते हैं लिहाजा इस समस्या का समाधान करने और पुलिस की छवि को मित्रवत बनाने के मकसद से खाकी फ्री नीति बनायी गई है। अग्रवाल ने आगे कहा कि वो पुलिस की छवि सुधारने की कोशिश कर रहे हैं ताकि मंदिर दर्शन करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं का अनुभव सुखद हो। उन्होंने कहा कि आमतौर पर पुलिस बिना शारीरिक स्पर्श किए भीड़ को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं जो कि बतौर श्रद्धालु हमारे लिए एक सुखद अनुभव है।

कांग्रेस नेता और कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री को लोकायुक्त का नोटिस

बेंगलुरू। कर्नाटक लोकायुक्त ने राज्य के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को आय से अधिक संपत्ति मामले में नोटिस भेजा है। नोटिस में कहा गया है, आपके खिलाफ केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) का मामला है। मामला लोकायुक्त को स्थानांतरित किया गया है।

आज दक्षिण को साधने...रैली और रोड शो करने को तैयार शाह और राहुल गांधी

चेन्नई । (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी अपने-अपने उम्मीदवारों के चुनाव प्रचार के लिए तमिलनाडु का दौरा करने वाले हैं। शाह शुक्रवार और शनिवार को रोड शो करने और चुनावी सभा को संबोधित करने वाले हैं। वहीं राहुल शुक्रवार को एक जनसभा को संबोधित करने वाले है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य इकाई ने कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री शुक्रवार दोपहर मदुरै पहुंचकर वहां से हेलीकॉप्टर द्वारा शिवगंगा जाएंगे और लगभग एक घंटे तक रोड शो करने और राजग उम्मीदवार इंथिया मक्कल कालवी मुनेत्र कषगम (आईएमकेएमके) के देवनाथन यादव के लिए वोट मांगने वाले हैं। इसके बाद श्री शाह मदुरै लौटकर भाजपा उम्मीदवार रामा श्रीनिवासन के समर्थन में एक रोड शो करने और बाद में मीनाक्षी अम्मन मंदिर में पूजा करने वाले है। श्री शाह शनिवार को भाजपा उम्मीदवार और पूर्व केंद्रीय मंत्री पोन राधाकृष्णन के पक्ष में कन्नियाकुमारी निर्वाचन क्षेत्र के थुकले में एक रोड शो करने वाले है। केन्द्रीय मंत्री का तिरुवरुर जाने का भी कार्यक्रम है, जहां वे एक चुनावी सभा को संबोधित करने और भाजपा उम्मीदवार एसजीएम रमेश के लिए वोट जुटाएंगे और फिर तेनकासी जाएंगे, जहां वह राजग उम्मीदवार और तमिझागा मक्कल मुनेत्र कड़गम (टीएमएमके) नेता जॉन पांडियन के समर्थन में रोड शो करने वाले है। वह तेनकासी से शाम को थूथुकुडी हवाई अड्डे से विशेष विमान से दिल्ली के लिए रवाना हो जाएगें। इस बीच, राहुल गांधी द्रमुक के नेतृत्व वाले सेक्युलर प्रोग्रेसिव फ्रंट के समर्थन में प्रचार करने और एक जनसभा को संबोधित करने वाले हैं। द्रमुक राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी इंडिया समूह का भी हिस्सा है। कांग्रेस नेता शुक्रवार को तिरुनेलवेली सीट से चुनाव लड़ रहे कांग्रेस उम्मीदवार सी.रॉबर्ट ब्रूस के समर्थन में पलायमकोट्टई में एक चुनाव अभियान बैठक को संबोधित करने वाले है।

राज कुमार आनंद आप छोड़ने के बाद किस पार्टी में होंगे शामिल

नई दिल्ली (ईएमएस)। राज कुमार आनंद ने आम आदमी पार्टी से इस्तीफा देने के बाद किसी अन्य पार्टी को ज्वाइन करने की संभावनाओं को खारिज कर दिया। राज कुमार आनंद ने किसी अन्य पार्टी को ज्वाइन करने के सवाल पर कहा, मैं कहीं नहीं जा रहा हूं। राज कुमार आनंद ने आप के साथ ही मंत्री पद से भी इस्तीफा दे दिया है। राज कुमार आनंद ने कहा कि वह बाबा साहेब की वजह से मंत्री बने हैं। उन्होंने साथ ही आरोप लगाए कि आम आदमी पार्टी में दलित को प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है। 2020 में विधायक बने राज कुमार को सामाजिक कल्याण के अलावा कई मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि आप में शीर्ष नेताओं में कोई भी दलित नहीं है। पार्टी दलित विधायकों, पार्षदों और मंत्रियों का सम्मान नहीं करती है। ऐसी परिस्थिति में सभी दलित ठगा हुआ महसूस करते हैं। राज कुमार आनंद ने कहा कि हम एक समावेशी समाज में रहते हैं लेकिन भागीदारी की बात करना गलत नहीं है। एक ऐसी पार्टी में रहना कठिन है। इसलिए मैंने पद से इस्तीफा दे दिया। राज आनंद ने कहा कि दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल पर भी निशाना साधा और कहा जंतर मंतर से उन्होंने कहा था कि राजनीति बदलेगी तो देश बदल जाएगा। राजनीति तो नहीं बदली लेकिन राजनेता जरूर बदल गए। इस्तीफा देने की टाइमिंग को लेकर पूछे गए सवाल पर राज कुमार आनंद ने कहा कि यह टाइमिंग की बात नहीं है। कल तक हम यह सोच रहे थे कि हमें फंसाया जा रहा है लेकिन हाई कोर्ट के फैसले के बाद ऐसा लग रहा है कि हमारी तरफ से ही कुछ गलत हुआ है। बता दें कि दिल्ली हाई कोर्ट ने मंगलवार को सीएम केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ दायर की गई याचिका को खारिज कर दिया था।

आतंकवाद पर राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को फिर दी चेतावनी, कहा- हम करेंगे सफाए में मदद

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को उसकी धरती पर आतंकवाद से निपटने में भारत की ओर से सहायता की पेशकश की है। समाचार एजेंसी एएनआई के साथ एक साक्षात्कार में राजनाथ सिंह ने इस्लामाबाद को आतंकवाद का उपयोग करके भारत को अस्थिर करने की कोशिश करने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी और कहा पाकिस्तान को आतंकवाद रोकना चाहिए और अगर वह असमर्थ महसूस करता है, तो भारत आतंकवाद को रोकने के लिए सहयोग करने के लिए तैयार है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एलएसी पर चीन द्वारा निर्माण और अरुणाचल प्रदेश के कई गांवों का नाम बदलने पर कहा कि एलएसी के उस पार जो उनकी ज़मीन है उसपर वे कुछ करते हैं, तो मैं इस संबंध में क्या कर सकता हूं। बॉर्डर के पास हमने भी काफी निर्माण किया है...लेकिन दोनों देशों की ओर से शांति स्थापित करने के प्रयास भी होने चाहिए।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चीन मुद्दे पर कांग्रेस के घोषणापत्र को लेकर कहा कि मैं नहीं कहना चाहता कि कांग्रेस के कार्यकाल में क्या हुआ था, कितने हज़ार वर्ग किलोमीटर ज़मीन चीन के कब्ज़े में गई। लेकिन मैं देश की जनता को आश्वस्त करना चाहता हूं कि मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के रहते हुए एक इंच ज़मीन पर भी कोई कब्ज़ा नहीं कर सकता, एक इंच भी ज़मीन जाने नहीं देंगे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 1975 के आपातकाल पर कहा कि मुझे आपातकाल के दौरान मेरी मां के अंतिम संस्कार के लिए पैरोल भी नहीं दिया गया। वो लोग हम लोगों पर तानाशाही के आरोप लगाते हैं। अपने गिरेबान में झांक कर नहीं देखते हैं।

प्रफुल्ल पटेल का दावा, 50 प्रतिशत भाजपा के साथ आने को तैयार थे शरद पवार... आखिरी मौके पर पलटे

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के पूर्व नेता प्रफुल्ल पटेल ने दिग्गज नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार को लेकर बड़ा दावा कर दिया है। उनका कहना है कि पवार भी भतीजे अजित पवार के साथ आने के लिए आधे तैयार थे। हालांकि, प्रफुल्ल के दावों को शरद कैंप ने बेकार की बात करार दिया है। पटेल राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के गुट में शामिल हैं।

रिपोर्ट्स के अनुसार, पटेल ने कहा, 2 जुलाई 2023 को अजित पवार और हमारे मंत्रियों ने महाराष्ट्र सरकार में शपथ ली थी। 15 और 16 जुलाई को हम मुंबई में शरद पवार से मिले थे। हम सभी ने उनका आशीर्वाद लेकर साथ आने का अनुरोध किया। हम सभी लोगों ने कहा था कि हमें आपके नेतृत्व में काम करना है। उन्होंने बताया, बाद में अजित और शरद पवार की मुलाकात पुणे में हुई। मुझे लगता है कि पवार साहब (भारतीय जनता पार्टी और एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की गठबंधन सरकार में) शामिल होने के लिए 50 फीसदी तैयार थे।

बीते साल 2 जुलाई को एनसीपी में फूट हो गई थी। तब अजित सहित 8 मंत्री महाराष्ट्र सरकार में शामिल हो गए थे। बाद में एनसीपी में फूट की बात चुनाव चिह्न तक भी आई। फरवरी में भारत निर्वाचन आयोग यानी ईसीआई का फैसला आया और अजित गुट को असली एनसीपी करार दे दिया गया। वहीं, सीनियर पवार की पार्टी को एनसीपी-शरदचंद्र पवार का नाम मिला।

वहीं शरद गुट के प्रवक्ता क्लाइड क्रिस्टो का कहना है, ये बयान बेकार है और इसका कोई मतलब नहीं है। इस बयान में कोई भी सच्चाई नहीं है। ये सभी बयान सिर्फ अपनी कीमत बढ़ाने के लिए दिए जा रहे हैं, क्योंकि भाजपा अजित समूह के साथ इसतरह का बर्ताव कर रही है, जैसे वे कुछ नहीं हैं।

भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने पर बोले जयशंकर, सरकार के लिए सबसे पहले देश की सुरक्षा

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार को कहा कि अगर पड़ोसी देश म्यांमार में हालात सामान्य होते तो भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने या फ्री मूवमेंट रिजीम (एफएमआर) को खत्म करने की कोई जरूरत नहीं होती। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सीमा पर बाड़ लगाने का निर्णय केंद्र द्वारा किया गया था क्योंकि यह देश की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। यह उल्लेख करना उचित है कि फरवरी 2021 में सैन्य तख्तापलट के बाद अपने देश से भागने के बाद म्यांमार के हजारों लोगों ने कई पूर्वोत्तर राज्यों, विशेष रूप से मिजोरम में शरण ली। मिजोरम के आइजोल में बीजेपी का घोषणापत्र जारी होने के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए जयशंकर ने ये टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि हमारे देश की सुरक्षा, मिजोरम सहित हमारे राज्यों की सुरक्षा के लिए हमें कुछ सावधानियां बरतने की जरूरत है। लेकिन अभी हम जो सावधानियां बरत रहे हैं वह एक निश्चित स्थिति की प्रतिक्रिया में हैं। इस वक्त भी हमारा पड़ोसी देश बेहद मुश्किल दौर से गुजर रहा है। अगर म्यांमार में हालात सामान्य होते तो ऐसा नहीं होता। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सरकार लोगों की चिंताओं के साथ-साथ सीमा पर परंपराओं, रीति-रिवाजों और रिश्तों के प्रति अत्यधिक चौकस है। जयशंकर ने ने प्रस्तावित सीमा बाड़ लगाने और एफएमआर के उन्मूलन के बारे में बात करते हुए कहा कि अभी यह जरूरी है कि हम वह सावधानी बरतें. इसलिए हम चाहते हैं कि लोग समझें कि यह आज की स्थिति की प्रतिक्रिया है। सरकार ने इस साल फरवरी में देश की सुरक्षा को बढ़ावा देने और दोनों देशों के बीच फ्री मूवमेंट रिजीम (एफआरएम) को खत्म करने के लिए एक और कदम में 1,643 किलोमीटर लंबी भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने के फैसले की घोषणा की। एफएमआर भारत-म्यांमार सीमा के करीब रहने वाले लोगों को बिना वीजा के एक-दूसरे के क्षेत्र में 16 किमी तक जाने की अनुमति देता है।

केंद्र सरकार किसानों के संदर्भ में बड़े फैसले करने जा रही है : राजनाथ सिंह

रीवा (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि केंद्र सरकार किसानों के संदर्भ में बड़े फैसले करने जा रही है। सवा सौ करोड़ की लागत से देश में लगभग 700 गोदाम बनाए जाएंगे। किसान इसमें अपनी उपज को रख सकेंगे और दाम बढ़ने पर बेच भी सकेंगे। जब वे अपनी उपज को गोदाम में रखेंगे तो उन्हें कुछ राशि भी मिल जाएगी। देश में गरीबों की स्थिति में आए बदलाव का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि बीते 10 साल में देश के लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। केंद्र सरकार गरीबों को मुफ्त राशन दे रही है वह 2029 तक मिलता रहेगा।

इसके साथ ही राजनाथ सिंह ने कहा है कि भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदल रहा है। मध्य प्रदेश के रीवा संसदीय क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार जनार्दन मिश्रा के समर्थन में देवतालाब में आयोजित जनसभा में रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि दुनिया में भारत के प्रति धारणा बदल गई है और आने वाले वर्षों में भारत दुनिया की महाशक्ति बन जाएगा। उन्होंने राम मंदिर को लेकर कहा कि भाजपा अपने घोषणापत्र में इसके बारे में लगातार कहती आई है और आज भगवान राम का मंदिर भी अयोध्या में बन गया है। यह राम राज्य आने का संकेत है। राम राज्य का अर्थ है जब लोगों में अधिकार नहीं बल्कि कर्तव्य बोध हो। हम लोगों ने धारा 370 खत्म करने की बात की थी वह भी खत्म हो गई। तीन तलाक खत्म करने की बात कही थी उस पर अमल किया गया है।

ममता को ईद के मौके पर कहा, कोई भी अगर दंगा करने आता... दिमाग शांत रखे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ईद के मौके पर केंद्र की मोदी सरकार पर हमला किया है। उन्होंने बंगाल में केंद्रीय राज्य एजेंसियों जैसी ईडी और एनआईए सहित एजेंसी के कार्रवाई को लेकर केंद्र की व्यवहार पर निशाना साधा है।

कोलकाता के रेड रोड पर लोगों को संबोधित कर ईद उल फितर के मौके पर ममता ने कहा कि कोई भी अगर दंगा करने आता है, तब आप चुप रहिए खुद को ठंडा रखें। अगर कोई ब्लास्ट होता है, तब वह एनआईए को भेज देते हैं, कि सभी को गिरफ्तार कर लो। गिरफ्तार करते-करते देश ही सुना हो जाएगा। हम सुंदर आसमान चाहते हैं जिसके लिए सभी का साथ में मौजूद होना जरूरी है।

जलपाईगुड़ी में चुनावी रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टीएमसी पर हमला बोला था। टीएमसी अपने भ्रष्ट नेताओं को पद पर बने रहने का लाइसेंस देना चाहती है। केंद्रीय जांच एजेंसिया पश्चिम बंगाल आती है, तब टीएमसी उन पर हमला करती है।

इस दौरान उन्होंने कहा कि खुशियां ईद की है। यह ताकत देने की ईद है। इस ईद को एक महीने तक उपवास करके मनाना बहुत बड़ी बात है। हम देश के लिए खून बहाने को तैयार है, लेकिन देश के लिए अत्याचार बर्दाश्त नहीं करने वाले है। सभी धर्मों में सद्भाव होना चाहिए। सभी की सुरक्षा होनी चाहिए।

उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाया कि वह चुन चुन कर मुसलमान नेताओं को फोन कर रही है। नेताओं से पूछा जा रहा है यह कि उन्हें क्या चाहिए। ममता बनर्जी ने कहा कि वह यूनिफॉर्म सिविल कोड, एनआरसी और सीएए को लागू नहीं होने देने वाले है।

आजम खान जेल में हैं और अब वो दमखम भी नहीं रहा, फिर कैसे जीतेगी सपा

रामपुर (एजेंसी)। इस बार के लोकसभा चुनाव में रामपुर सीट को लेकर चर्चाएं ज्यादा सुनाई दे रहीं हैं,कारण ये है कि इस सीट से 10 बार विधायक रहे आजम खान जेल में हैं। यहां इनका दबदबा था और उन्हे चाहने वालों की बड़ी फौज हुआ करती थी। जन और नेता के बीच आपसी संवाद निरंतर बना रहता था। अब चूंकि आजमखान जेल में हैं तो ये संवाद भी प्रभावित हुआ ही होगा। ऐसे में माना जा रहा है कि सपा को यह सीट जीतना किसी चुनौती से कम नहीं है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रामपुर से दिल्ली के एक मौलवी मोहिबुल्लाह को टिकट दिया है। आजम खान जाहिर तौर पर चाहते थे कि अखिलेश चुनाव लड़ें और उनके इनकार करने के बाद उन्होंने अपने पुराने सहयोगी असीम राजा की सिफारिश की जबकि राजा ने सपा उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन पत्र भी दाखिल किया था, जांच के दौरान कागजात खारिज कर दिए गए थे। अब एसपी जिला संगठन में विद्रोह है, और मोहिबुल्लाह की पसंद पर सवाल उठा रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट की मानें तो मोहिब्बुल्लाह के चुनाव कार्यालय प्रभारी और चचेरे भाई मकतूब अहमद की शिकायत है कि सपा जिला अध्यक्ष अजय सागर और सपा रामपुर प्रमुख राजा समर्थन नहीं कर रहे हैं। पूर्व सपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गोयल बसपा के लिए काम कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने आलाकमान से शिकायत नहीं की है, लेकिन जब अखिलेश 14 अप्रैल को रामपुर में रैली के लिए आएंगे तो वे इस मुद्दे को उठाएंगे। वहीं गोयल का कहना है कि एक बाहरी व्यक्ति मोहिब्बुल्लाह को नामांकन का उद्देश्य आजम खान की राजनीति को खत्म करना है। उन्होंने कहा, रामपुर के निजाम को कोई नहीं बदल पाएगा। आजम के सभी समर्थक मोहिब्बुल्लाह के खिलाफ हैं। हालाँकि, दूसरी तरफ, इसका मतलब यह है कि खान के विरोधी, जो लंबे समय से दूर थे, मोहिब्बुल्लाह के समर्थन में सामने आ रहे हैं।

सेवानिवृत्त शिक्षक रहमतुल्लाह कहते हैं कि मोहिब्बुल्लाह को अभी भी रामपुर से आसानी से जीतना चाहिए। वह एक मौलवी हैं और सभी मुसलमान उनका समर्थन करेंगे। वे यहां या तो सपा या कांग्रेस को वोट देते हैं। उन्होंने आजम खान को भी सपा के कारण वोट दिया। केवल उनके प्रति वफादार लोग ही मोहिब्बुल्लाह का समर्थन नहीं कर सकते। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मोहिब्बुल्लाह की जीत का मतलब होगा, आज़म के दबदबे का अंत। वह क्षेत्र में सपा के मुस्लिम चेहरे के रूप में आजम की जगह लेंगे। एक सपा कार्यकर्ता बताते हैं कि जहां मोहिब्बुल्लाह के पोस्टरों पर आजम खान की तस्वीरें हैं, वहीं पार्टी के नारों से उनका नाम गायब है।

वहीं दूसरी तरफ भाजपा ने 2022 के उपचुनाव में रामपुर लोकसभा सीट जीतने वाले घनश्याम सिंह लोधी को फिर से मैदान में उतारा है। इसके अल्पसंख्यक विंग के नेता और अपना दल (एस) के सुअर विधायक, शफीक अहमद अंसारी, लोधी के लिए प्रचार करने के लिए मुसलमानों तक पहुंच रहे हैं। एक बीजेपी नेता का कहना है कि उन्हें उम्मीद है कि आजम की अनुपस्थिति में, कुछ मुसलमान बीजेपी को वोट दे सकते हैं... कम से कम जिन्हें मुफ्त राशन मिल रहा है। रामपुर के बीजेपी नेता राजीव मांगलिक कहते हैं, बीजेपी सरकार ने यहां विकास किया है. हम उस पर और सुशासन पर चुनाव लड़ रहे हैं। लोग इसलिए भी हमारे साथ हैं क्योंकि हमने राम मंदिर का वादा पूरा किया. जनवरी में मंदिर खुलने के बाद से, हम लगभग 5,000 स्थानीय लोगों को दर्शन के लिए अयोध्या ले गए हैं। एएमयू से छात्र राजनीति के बाद सक्रिय सियासत में कदम रखने वाले आजम खान 10 बार विधायक चुने गए। सपा सरकार में आजम खान कद्दावर मंत्री रहे।

उन्होंने सहकारिता, वक्फ, मुस्लिम मामलों से लेकर नगर विकास मंत्रालय तक संभाला। वर्ष 1996 में विस चुनाव हारने पर सपा ने उन्हें राज्यसभा सदस्य बनाकर दिल्ली भेज दिया। वर्ष 2019 में वह सपा से लोकसभा चुनाव लड़े और जीतकर लोकसभा सदस्य बन गए। जिसके बाद उन्होंने विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, 2022 के विस चुनाव में वह फिर से शहर विधायक चुने गए। इनकी पत्नी तजीन फात्मा राज्यसभा सदस्य रहीं और बाद में शहर विधायक बनीं। बेटे अब्दुल्ला भी स्वार से विधायक चुने गए। यह बात अलग है कि धोखाधड़ी में सजायाफ्ता होने के चलते आजकल ये तीनों जेल में हैं।

द. कोरिया में विपक्षी गुट ने 60 फीसदी सीटें जीती

सोल । द.कोरिया के उदारवादी विपक्षी गुट ने संसदीय चुनावों में 60 फीसदी से अधिक सीटें जीतीं है। राष्ट्रीय चुनाव आयोग ने इसकी जानकारी दी। मुख्य उदारवादी विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी ने सीधे तौर पर चुनाव में 161 सीटें हासिल कीं, जबकि उसकी सैटेलाइट पार्टी ने 99.99 प्रतिशत वोटों की गिनती के साथ 14 आनुपातिक प्रतिनिधित्व (पीआर) स्लॉट हासिल किया। आयोग ने बताया कि रीबिल्डिंग कोरिया पार्टी ने 12 पीआर अर्जित की, जबकि केंद्रीय-वामपंथी न्यू फ्यूचर पार्टी और वामपंथी प्रोग्रेसिव पार्टी ने एक-एक सीट हासिल की। सत्तारूढ़ पीपुल्स पावर पार्टी और उसकी सहयोगी पार्टी ने 90 और 18 पीआर सीटें प्राप्त कीं। केंद्रीय-दक्षिणपंथी न्यू रिफॉर्म पार्टी ने एक निर्वाचन क्षेत्र की सीट और दो पीआर सीटें हासिल कीं। नेशनल असेंबली के 300 सदस्यों के लिए चतुष्कोणीय चुनाव के लिए मतदान हुआ। 14,259 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं ने 254 निर्वाचन क्षेत्रों की सीटों और 46 पीआर स्लॉट के लिए मतदान किया।

सिंगर लेडी गागा ने तीसरी बार की सगाई.....प्रेमी कौन रिपोर्ट में पढ़े

लंदन । मशहूर अमेरिकन सिंगर लेडी गागा गानों की धूम दुनियाभर में रहती है, लेकिन को पर्सनल लाइफ के कारण भी खूब सुर्खियां बटोरती हैं। साथ ही वह किसे डेट कर रही हैं, उनका करेंट बॉयफ्रेंड कौन है... इस पर सारे फैंस की नजरें टिकी रहती हैं और अब लेडी गागा जुड़ी कुछ ऐसी ही खबर सामने आ रही है, जिसे जानकर आप खुश हो जाएंगे। बताया जा रहा हैं कि लेडी गागा जल्द ही चर्च में व्हाइट गाउन पहनकर फादर के सामने बॉयफ्रेंड माइकल पोलांस्की को किस करने वाली हैं और उन्हें अपना हमसफर बनाने वाली हैं। जी हां! ऐसा हम नहीं कह रहे हैं, बल्कि उनकी वायरल हो रही तस्वीरें गवाही दे रही है। इन तस्वीरों में गागा अपनी सगाई की रिंग पहने दिख रही हैं। सामने आई तस्वीरों में लेडी गागा ऑल ब्लैक लुक में नजर आ रही है। इन तस्वीरों में उनके लुक्स से ज्यादा बड़ी सी डायमंड रिंग ने सारी लाइमलाइट चुरा ली। गागा इन दिनों एंटरप्रेन्योर माइकल पोलांस्की को डेट कर रही हैं। इनके रिश्ते को सालभर से ऊपर हो चुका है। अब खबर आ रही है कि इन दोनों की सगाई हो गई है। हालांकि, अभी तक लेडी गागा या पोलांस्की की तरफ से ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है। मालूम हो कि इससे पहले लेडी गागा दो बार इंगेजमेंट कर चुकी हैं। 2011 में उन्होंने शिकागो फायर स्टार टेलर किन्नी के साथ डेटिंग शुरू की जिन्होंने उनके गाने यू एंड आई के वीडियो में अभिनय किया था और कपल ने वेलेंटाइन डे 2015 पर सगाई कर ली। इस मौके पर किन्नी ने गागा को दिल के आकार की अंगूठी पहनाई थी, लेकिन 2 साल बाद दोनों अलग हो गए थे। इसके बाद उन्होंने हॉलीवुड टैलेंट एजेंट क्रिश्चियन कैरिनो संग डेटिंग की और सगाई की। ये रिश्ता भी ज्यादा वक्त तक नहीं चला और साल 2019 की शुरुआत में उनका ब्रेकअप हो गया।

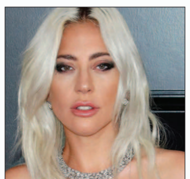

6 हजार भारतीय जाएंगे इजराइल, वहां श्रमिकों की कमी पूरी करेंगे; दिसंबर में 800 से ज्यादा भारतीय काम करने गए थे

तेल अवीव। इजराइल-हमास जंग 6 महीने से जारी है। इस बीच अप्रैल-मई 2024 में 6 हजार भारतीय इजराइल जाएंगे। वे यहां श्रमिकों की कमी पूरी करेंगे। दिसंबर में करीब 800 से ज्यादा भारतीय नौकरी के लिए इजराइल पहुंचे थे। इनमें से ज्यादातर केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश के थे। दरअसल, मई 2023 में इजराइल और भारत के बीच लेबर फोर्स को लेकर एक समझौता हुआ था। इसके तहत 42 हजार भारतीय कामगार इजराइल में काम करने जाने वाले थे। दिसंबर में जंग को लेकर इजराइली पीएम नेतन्याहू ने पीएम मोदी से फोन पर बात की थी। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच भारतीय लेबर को इजराइल भेजने के एग्रीमेंट में तेजी लाने पर सहमति बनी थी।

गोलीबारी और मानसिक तनाव भी है भारतीय छात्रों की मौत का कारण

वॉशिंगटन। अमेरिका में रह रहे भारतीय छात्रों की लगातार हो रही मौत के मामलों ने चिंता बढ़ा दी है। इसको लेकर प्रवासी संगठनों ने भी चिंता जाहिर करते हुए हालातों को नियंत्रित करने की मांग की थी। इसी बीच फॉउंडेशन फार इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज (एफआइआइडीएस) ने एक विश्लेषण में पाया कि इस घटनाओं का प्रमुख कारण संदिग्ध गोलीबारी, अपहरण, सुरक्षा ज्ञान की कमी के कारण प्राकृतिक मौतें, आत्महत्या के लिए प्रेरित करने वाले मानसिक मुद्दे और यहां तक कि संदिग्ध हादसे व हिंसक अपराध हैं। संगठन ने कहा कि ऐसे में अधिकारियों को सुरक्षा शिक्षा, खोज एवं बचाव प्रक्रियाएं बढ़ानी चाहिए और रैगिंग के खिलाफ सख्त नियम लागू किए जाने चाहिए। संगठन ने कहा कि अमेरिका में 2.75 लाख भारतीय छात्र पढ़ाई कर रहे हैं और यह कुल विदेशी छात्रों का 25 प्रतिशत है। भारतीय छात्र फीस और खर्च के रूप में अमेरिका की अर्थव्यवस्था में तकरीबन नौ अरब डॉलर का योगदान करते हैं। ऐसे में छात्रों की मौतें चिंताजनक है और इससे छात्रों की आमद प्रभावित हो सकती है। बता दें कि कुछ दिनों पहले अमेरिका में 25 वर्षीय भारतीय छात्र मोहम्मद अब्दुल अरफात की मौत हो गई। वो पिछले कुछ दिनों से लापता था। अरफात को ढूंढने की कार्रवाई जारी थी लेकिन क्लीवलैंड ओहियो में उसकी मौत हो गई है। 19 मार्च को अरफात के परिवार को एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया, जिसने दावा किया कि अरफात का कथित तौर पर ड्रग्स बेचने वाले एक गिरोह ने अपहरण कर लिया था और उसे छोड़ने के लिए 1,200 अमेरिकी डॉलर की मांग की थी। उसके पिता ने कहा कि फोन करने वाले ने फिरौती न देने पर अरफात की किडनी बेचने की भी धमकी दी थी।

इजरायल से खफा ईरान बना रहा है परमाणु बम, जल्द तैयार हो जाएंगे 3 एटमी बम

तहरान। इजरायल और हमास के बीच चल रही जंग को लेकर ईरान कई बार शांति का प्रस्ताव रख चुका है। इजरायल ने इस तरह के प्रस्तावों को ठुकरा दिया। इससे इजरायल और ईरान के बीच तनातनी शुरु हो गई है। अब इसी दुश्मनी के बीच ऐसी रिपोर्ट है कि ईरान परमाणु बम बनाने के बहुत करीब है। अमेरिकी अखबार ने यह दावा करके टेंशन पैदा कर दी है। ऐसा भी पता लगा है कि ईरान ने भारी मात्रा में यूरेनियम जमा कर दिया है, इतना कि वह हफ्तेभर में ही तीन एटम बना सकता है। ईरान सिर्फ परमाणु हथियार ही नहीं अपने कुछ हथियारों को यूरेनियम की मदद से अपग्रेड भी कर रहा है। ईरान को लेकर इस तरह के दावों ने दुनिया को नए युद्ध के खतरे में डाल दिया है। ईरान ने यूरेनियम का इतना खजाना जमा कर दिया है कि वह हफ्तेभर में ही कम से कम तीन एटम बम तैयार कर सकता है। हालांकि बता दें कि किसी भी परमाणु हथियार के पूर्ण रूप से तैयार होने में कम से कम छह महीने की अवधि लगती है। अखबार ने अपनी रिपोर्ट में ईरान के परमाणु संपन्न देश बनने के करीब होने को दुनिया के लिए नया खतरा बताया है। दावा किया है कि इस तरह की रिपोर्ट देश में नए युद्ध और चिंता बढ़ाने वाली हैं। अमेरिकी मीडिया ने बुधवार को अधिकारियों के हवाले से खुलासा किया कि ईरान परमाणु हथियार क्षमता के करीब पहुंच रहा है और तेहरान ने तेजी से बहुत संख्या में यूरेनियम भी जमा कर दिया है। परमाणु बम बनाने में यूरेनियम की काफी जरूरत होती है। उधर, ईरान ने हालांकि कहा कि उसकी परमाणु बम बनाने की कोई योजना नहीं है।

स्वीडन में यूरोविजन में इजरायल की भागीदारी का विरोध करते हुए।

किम जोंग-उन ने सैन्य टकराव होने पर दुश्मनों को मारने का संकल्प लिया

सियोल। उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग-उन ने सैन्य टकराव होने पर दुश्मनों को दुश्मनों को मारने का संकल्प लिया है। यह जानकारी मीडिया ने गुरुवार को दी। एक रिपोर्ट में कोरियाई सेंट्रल न्यूज एजेंसी (केसीएनए) ने बताया कि किम ने बुधवार को किम जोंग-इल यूनिवर्सिटी ऑफ मिलिट्री एंड पॉलिटिक्स की अपनी यात्रा के दौरान यह बात कही। केसीएनए के मुताबिक किम ने कहा कि अब युद्ध के लिए पहले से कहीं अधिक अच्छी तरह से तैयार होने का समय आ गया है और उत्तर कोरिया को इसके लिए और अधिक दृढ़ता से तैयार होना चाहिए। किम ने विश्वविद्यालय को नई सैन्य प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का निर्देश भी दिया। गौरतलब है कि उत्तर कोरिया इस साल हथियारों के परीक्षण में तेजी ला रहा है। इसमें समुद्र और जमीन से क्रूज मिसाइलों का प्रक्षेपण और सुपर-बड़े मल्टीपल रॉकेट लॉन्चर से फायरिंग अभ्यास शामिल हैं। पिछले हफ्ते किम ने हाइपरसोनिक वारहेड से युक्त एक नई मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण का दावा किया था।

रुस ने फिर निभाई दोस्ती....चीन के विरोध के बाद भी भारत को दी मिसाइल ईगला एस

मास्को(एजेंसी)। भारत के पुराने और भरोसेमंद दोस्त रूस ने यूक्रेन युद्ध के बीच भारत को सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल ईगला एस की आपूर्ति कर दी है। भारत जल्द ही इस मिसाइल को हिमालय में चीन के खिलाफ तैनात करेगा। यह मिसाइल कहीं भी आसानी से ले जाई जा सकती है, और कंधे पर रखकर फायर की जा सकती है। इसके जरिए फाइटर जेट, ड्रोन और क्रूज मिसाइलों को निशाना बनाया जा सकता है। रूस ने इस मिसाइल की आपूर्ति उस समय पर की है, जब चीन और भारत के बीच तनाव काफी बढ़ा हुआ है। वहीं यूक्रेन युद्ध के बीच रूस और चीन के बीच दोस्ती बिना किसी लिमिट वाली हो गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह मिसाइल देना दिखाता है कि चीन के साथ करीबी होने के बाद भी रूस भारत के साथ दोस्ती को कमजोर नहीं करने जा रहा है। भारतीय सेना ने साल 2021 में सबसे पहली बार इस सोवियत डिजाइन वाली मिसाइल का इस्तेमाल शुरू किया था। चीन के साथ 4 साल से चल रहे तनाव के बीच भारत कंधे पर रखकर दागे जाने वाली मिसाइल को बड़े पैमाने पर खरीद रहा है। इसके

पहले साल 2020 में गलवान हिंसा के दौरान भारत के कई जवान शहीद हो गए थे। विशेषज्ञों का कहना है कि रूस का यह मिसाइल देना दिखाता है कि दोस्ती के बाद भी चीन हथियार मामले में रूसी नेतृत्व को भारत के खिलाफ झुका नहीं पाया। चीन भारत को हथियार बेचने का रूस से विरोध करता रहा है, लेकिन पुतिन ने साफ कह दिया है कि वह ड्रैगन की इस बात को नहीं मानने वाले हैं।

ऑब्जरवर रीसर्च फाउंडेशन के नंदन उन्नीकृष्णन ने कहा, आम जनता को इस समझौते की असली शर्तें नहीं पता हैं, लेकिन आम राय यही है कि किसी हथियार को देने से पहले रूस उसके इस्तेमाल के संबंध में कोई शर्त नहीं लगाता है। उन्होंने कहा कि अब तक रूस और चीन के रिश्तों ने भारत और रूस के बीच रक्षा भागीदारी को प्रभावित नहीं किया है। हाल ही में भारत ने ब्रह्मोस मिसाइल फिलीपींस को बेची है जिस रूस के साथ मिलकर बनाया है। फिलीपींस के साथ चीन का तनाव चल रहा है और मनीला का अमेरिका के साथ रक्षा समझौता भी है। बताया जा रहा हैं कि फिलीपींस जल्द ही ब्रह्मोस मिसाइल को दक्षिण चीन सागर में दादागिरी दिखा रहे चीन के खिलाफ तैनात करेगा। फिलीपींस के पूर्व रक्षा मंत्री डेलफिन लोरेंजाना का कहना है कि दुनिया की सबसे तेज क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस उनके देश की संप्रभुता के खिलाफ किसी दुस्साहस का करारा जवाब देगी। वहीं अमेरिकी प्रोफेसर क्रिस्टोफर क्लारी का कहना है कि रूस पर चीन के बढ़ते प्रभाव और भविष्य में होने वाले असर से भारत चिंतित हो सकता है। उन्होंने कहा कि भारत को इस बात से चिंतित होना चाहिए कि अगर कोई बड़ा सैन्य टकराव होता है, तब चीन रूस पर हथियारों की आपूर्ति को रोकने के लिए अपना पूरा दबाव डाल सकता है।

10 महीने से पृथ्वी के तापमान की रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज

- सबसे गर्म महीना बना मार्च

वाशिंगटन (एजेंसी)। ताजा आंकड़ों से पता चला है कि बीता मार्च महीना धरती के अब तक के रिकॉर्ड में सबसे गर्म मार्च रहा है। पिछले 10 महीने से लगातार पृथ्वी के तापमान की रिकॉर्ड संख्या में वृद्धि हुई है। इस बदलाव से वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों में इस बात को लेकर चिंता बढ़ गई है कि दुनिया और तेजी से जलवायु परिवर्तन के एक नए युग में प्रवेश कर सकती है। हाल की गर्मी के पीछे अल नीनो को जिम्मेदार ठहराया जाता रहा है। ऐसा माना जाता है कि आने वाले महीनों में अल नीनो के खत्म होने के बाद तापमान में अस्थायी रूप से कमी होनी चाहिए, हालांकि कुछ वैज्ञानिक इस बात से चिंतित हैं कि ऐसा नहीं होने जा रहा। गेमिन शिमट नासा के गोडार्ड इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस स्टडीज के निदेशक हैं। उन्होंने बीबीसी न्यूज से बातचीत में कहा, अगर हम अभी गर्मियों के अंत तक भी उत्तरी अटलांटिक या अन्य जगहों पर रिकॉर्ड तोड़ने वाले तापमान को देख रहे हैं तो हम वास्तव में अज्ञात क्षेत्र में चले गए हैं। जलवायु परिवर्तन पर नजर रखने वाली यूरोपीय एजेंसी कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस के अनुसार, पूर्व औद्योगिक काल के मार्च की तुलना में साल 2024 का मार्च 1.68 सेल्सियस गर्म था।

हालांकि, बहुत शोधकर्ता अभी भी यह नहीं मानते हैं कि जलवायु एक नए युग में प्रवेश कर चुकी है। वे गर्म होती धरती के दीर्घकालिक रुझानों को उम्मीदों के अनुरूप मानते हैं। लेकिन वैज्ञानिक अभी भी यह नहीं बता पा रहे हैं कि साल 2023 का आखिरी समय इतना गर्म क्यों होने लगा था। मार्च में होने वाली गर्मी को वैज्ञानिक अपेक्षित मानते हैं, क्योंकि अलनीनो पिछले साल जून में शुरू हुआ था और दिसम्बर में अपने चरम पर था। वैज्ञानिकों को हैरानी सितम्बर के आसपास तापमान के तेजी से बढ़ने को लेकर है। उस समय तक अलनीनो विकसित नहीं हुआ था, इसलिए लगातार गर्मी बढ़ने का कारण समझ नहीं आता।

यही वजह है कि वैज्ञानिक भविष्यवाणियों को लेकर बहुत चिंतित हैं। बीबीसी से डॉक्टर शिमट ने बताया कि 2023 को लेकर हमारे अनुमान बहुत आश्चर्यजनक रूप से गलत रहे और यदि पिछले आंकड़े काम नहीं करते हैं तो भविष्य के बारे में बताना बहुत कठिन होगा। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस वर्ष के आखिर तक अलनीनो के कमजोर होने से स्थिति में सुधार होगा। समुद्र की सतह के ठंडा होने से आम तौर पर वैश्विक वायु तापमान में अस्थायी गिरावट देखी जाएगी, लेकिन यह देखना बाकी है कि यह कैसे होगा।

रूस और कजाकिस्तान के कई इलाके जलमग्न, लाखों ने छोड़ा घर

मॉस्को। इन दिनों रुस और कजाकिस्तान के लोग पानी पानी से परेशान हैं लाखों लोगों ने घर छोड़ दिया है और कई लोग बेघर हो गए हैं। वजह ये है कि यूराल नदी में पानी बढ़ने के बाद बुधवार को रूस और कजाकिस्तान के शहरों और कस्बों में बाढ़ आ गई है। इससे एक लाख से अधिक लोगों को इलाका खाली करना पड़ा है। रूसी शहर आरेनबर्ग के कई हिस्से पानी में डूब गए हैं। वहीं, कजाकिस्तान में बाढ़ के कारण 97,000 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। मॉस्को से 1,200 किमी पूर्व में 550,000 आबादी वाले शहर आरेनबर्ग में, सैकड़ों घर डूब गए हैं। कम से कम 7,700 लोगों को यहां से निकाला गया है, क्योंकि यूराल नदी तेजी से खतरनाक स्तर की ओर बढ़ रही है। शहर के निकट के क्षेत्र पानी में डूबे दिखाई दे रहे हैं। कुरगन में 4,500 लोगों को निकाला गया और आशंका है कि हजारों लोगों को और सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की जरूरत पड़ सकती है। आरेनबर्ग में रहने वालों का कहना है कि उन्होंने इतनी भयावह स्थिति पहले नहीं देखी। ऐसी बाढ़ यहां पहले नहीं आई थी।

गाजा में हमास चीफ हानिए के 3 बेटों की मौत

-इजराइली सेना बोली- तीनों आतंकी थे, 4 पोते-पोतियां भी मारे गए; उनकी कार पर एयरस्ट्राइक हुई

गाजा/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल के हमले में बुधवार देर रात हमास चीफ इस्माइल हानिए के तीन बेटों की मौत हो गई। इजराइली सेना ने गाजा के अल-शती कैंप के पास एक कार पर एयरस्ट्राइक की। इसमें इस्माइल हानिए के तीन बेटों, 3 पोतियों और एक पोते की मौत हो गई। मौत की पुष्टि खुद हानिए ने की है।

इजराइली सेना का कहना है कि हानिए के तीनों बेटे आतंकी थे। सेना के मुताबिक, अमीर हानिए हमास में स्क्वाड कमांडर था। वहीं, हाजेम और मोहम्मद हानिए ऑपरेटिव्स थे। तीनों सेंट्रल गाजा में हमला करने के लिए जा रहे थे। इनमें से एक इजराइलियों को बंधक बनाने में भी शामिल था।

तीनों की शहादत का सम्मान करते हैं

इस्माइल हानिए ने कतर के मीडिया हाउस अल जजीरा को तीन बेटों की मौत की पुष्टि की। कहा कि उनकी शहादत का सम्मान हमें देने के लिए अल्लाह का शुक्रिया। वहीं, अल जजीरा को दिए एक इंटरव्यू में हानिए ने कहा कि हमास सरेंडर नहीं करेगा और हमले जारी रखेगा। हानिए ने कहा, उनका (इजराइलियों का) खून यरुशलम और अल-अक्सा की आजादी के लिए बहाएंगे। इसी राह पर बिना संकोच के आगे बढ़ते रहेंगे। उनके खून से हम अपने लोगों और अपने उद्देश्य के लिए आशा, भविष्य और स्वतंत्रता लाएंगे।

हमारी मांगें साफ हैं। दुश्मन अगर सोचता है कि बातचीत से कुछ बदलाव आ सकते हैं तो यह उसकी गलतफहमी है। अगर उन्हें लगता है कि मेरे बेटों को निशाना बनाकर हमास को अपनी स्थिति बदलने के लिए मजबूर किया जा सकता है तो यह गलत है। मेरे बेटों का खून हमारे लोगों के खून से ज्यादा प्रिय नहीं है।

जेल से इमरान का संदेश... 1971 की तरह टूटने की कगार पर पहुंच रहा पाकिस्तान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। क्या पाकिस्तान फिर से 1971 की तरह टूटने की कगार पर पहुंच चुका है, जब पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर बांग्लादेश बन गया था? यह सवाल उठाना इस कारण भी लाजमी हैं क्योंकि पाकिस्तान के पूर्व पीएम और वर्तमान में नेता विपक्ष इमरान खान ने कुछ ऐसा ही दावा किया है। उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान के जो मौजूदा हालात हैं, उस स्थिति में देश फिर से ध्वस्त होने के कगार पर पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि 1971 का ढाका संकट इसतरह ही आया था। इमरान ने कहा कि आज पाकिस्तान के जो हालात हैं, उसमें कभी भी आर्थिक बर्बादी हो सकती है। उन्होंने देश की शाहबाज सरकार और संस्थानों को चेतावनी देकर कहा कि किसी देश की स्थिरता के लिए जरूरी है, अर्थव्यवस्था मजबूत हो।

अदियाला जेल में इमरान से मुलाकात के बाद पीटीआई के नेताओं ने उनका संदेश मीडिया से बातचीत में जारी किया। उन्होंने कहा कि इमरान पाकिस्तान और उसके लोगों के लिए चिंतित हैं। इमरान ने मुलाकात के दौरान कहा कि आज देश गहरे संकट में है और इसके चलते 1971 की ढाका ट्रेजेडी जैसी स्थिति बन सकती है। पीटीआई के नेता सलमान अकरम राजा, शोएब शाहीन और इंतजार पंजुठा ने इमरान का संदेश पढ़कर कहा, आप जब जनता को अधिकार नहीं देते हैं, तब अर्थव्यवस्था ग्रोथ नहीं करती। 1970 में सेना प्रमुख याहया खान चाहते थे कि किसी को सत्ता न मिले। लेकिन जब शेख मुजीबुर रहमान की पार्टी को बहुमत मिला, तब सेना ने धोखाधड़ी वाला उपचुनाव करा दिया। उन्होंने कहा, इन उपचुनावों में 80 सीटों को अवामी लीग से छीन लिया गया क्योंकि याहया खान खुद राष्ट्रपति बनना चाहते थे। इमरान ने कहा कि मैं मानता हूं कि आज हम फिर उसी तरह के हालात में जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि तब लंदन प्लान था, जिसके तहत देश का बंटवारा हुआ। लेकिन अब फिर से आज की सरकार खुद ही लंदन प्लान तैयार कर रही है। इस बीच इमरान खान ने एक और संकेत दिया कि वह सेना से बातचीत के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि देश के हितों के लिए यह जरूरी है।

पुलिस ने गैंगस्टर के घर से हथियारों का जखीरा बरामद किया, पाक सेना ने थाने में घुसकर पुलिस को पीटा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। इस्लामाबाद(ईएमएस)। पाकिस्तान की सेना बेहद पावरफुल है। सरकार गिराना और बनाना यहां की सेना के हाथ में है। लोकतांत्रिक चुनाव तो सिर्फ कहने और सुनने को होते हैं। इसलिए पाकिस्तान की सेना के बारे में कहा जाता है कि दुनिया के तमाम मुल्कों के पास सेना है लेकिन पाकिस्तान की सेना के पास मुल्क है।

हाल ही में पाकिस्तानी सेना का एक और कारनामा सामने आया है जिसमें सेना के जवानों ने अपनी ही पुलिस को न केवल पीटा बल्कि अपने जूतों तले दबाकर उसे रौंद डाला। दरअसल यह पूरा मामला पंजाब सूबे के बहावलपुर शहर का है। यहां एक सेना के अफसर दो भाइयों पर आरोप था कि वह गैंगस्टर हैं और अपने घर में हथियारों का जखीरा रखा हुआ। इन दोनों के खिलाफ पुलिस ने ऑपरेशन लॉन्च किया था और घर पर रेड मारकर हथियार बरामद किए थे। इससे पाकिस्तान की मनबढ़ सेना का गुस्सा फूट पड़ा और करीब 20 सैनिकों ने पुलिस स्टेशन पर धावा बोल दिया। वहां रखा तमाम सामान तोड़फोड़ डाला और पुलिस वालों की जमकर पिटाई की। कई पुलिस वाले तो पिटाई से लहूलुहान हो गए और बख्श देने की भीख मांगते नजर आए। वहीं कुछ पुलिस वालों ने डर के मौके थाने से बाहर ही दौड़ लगा दी। एक वीडियो में दिखता है कि नईम नाम का सब-इंस्पेक्टर पाकिस्तान सेना के जवानों से जान की भीख मांगते हुए कहता है कि अल्लाह के नाम पर मुझे छोड़ दो।

दुनिया के सभी मुल्कों के पास सेना है, लेकिन पाकिस्तान की सेना के पास एक देश है। यह बात पाकिस्तान के लिए यूं ही नहीं कही जाती। सरकारें बनाने और गिराने से लेकर भारत जैसे मुल्कों में आतंकवाद फैलाने तक में उसकी भूमिका रहती है। यही नहीं मुल्क के अंदर भी वह अपना दर्जा सबसे ऊपर मानती है और कई बार तो आम लोगों को ही अत्याचार झेलने पड़ते हैं। लेकिन इस बार एक मामले ने तूल पकड़ लिया है। पाकिस्तान की सेना ने वहां के पंजाब सूबे की पुलिस को जमकर पीटा है और उसके वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। यही नहीं पुलिस और लोग सवाल उठा रहे हैं कि क्या सेना किसी भी नियम से परे है और वह किसी को भी मार पीट सकती है।

इस घटना के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। वकास नाम के एक पत्रकार ने वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें एक पुलिसकर्मी अपना दर्द बयान करते हुए पुलिस थाने के हालात दिखाता है। पुलिसकर्मी कहता है, दिल करता है कि डूब मर जाएं। हमारा यह हाल है कि एक आर्मी वाले के दो भाई डाकू हों। पुलिस उनके खिलाफ ऑपरेशन करे तो आर्मी वाले हथियारों से लैस होकर आएं और

हमारे अफसरों को मुजरिमों के सामने ले जाकर पीटा। यह कैसा पाकिस्तान है? आखिर सीएम साहिबा कहां हैं? अब देखते हैं, वह क्या कर लेती हैं। बता दें कि पंजाब की मुख्यमंत्री नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज हैं। दरअसल पुलिसकर्मी ने मरियम नवाज पर अपना दर्द बयान करते हुए तंज भी कसा है कि आखिर वह सेना के खिलाफ क्या कर पाएंगी। पाकिस्तान में सेना के हाथ में सबसे ज्यादा ताकत मानी जाती है। फिलहाल जेल में बैठे विपक्ष के नेता इमरान खान की इस हालत के लिए भी सेना से उनके टकराव को वजह माना जाता है।

संपादकीय

माफी नामंजूर

सर्वोच्च न्यायालय ने भ्रामक विज्ञापन मामले में माफी नामंजूर कर जो संदेश देने की कोशिश की है, उसे व्यापक व सकारात्मक दृष्टि से देखने की जरूरत है। बाबा रामदेव और पतंजलि आयुर्वेद के एमडी आचार्य बालकृष्ण की बिना शर्त माफी को स्वीकार करने से मना करने से ज्यादा महतवपूर्ण है, जिम्मेदार सरकारी अधिकारियों के प्रति कोई नरमी न बरतना। बुधवार को सभी आरोपी माफी की मुद्रा में थे, पर अदालत ने माफी को पर्याप्त नहीं माना। गुमराह करने वाले कथित विज्ञापन प्रकाशित करने का जिक्र करतेहुए अदालत ने कह दिया कि अवमानना मामले में कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहिए। अवमानना की कार्रवाई से बचने की हर संभव कोशिश की गई थी, पर ऐसा लगता है कि अदालत ने इस मामले को वांछित गंभीरता से लिया है। अदालत का मानना है कि जानबूझकर अदालत के निर्देश की अवहेलना की गई है और हलफनामे पहले मीडिया को भेजे गए हैं, ताकि प्रचार से लाभ लिया जा सके। खैर, न्यायालय ने आगे की सुनवाई 16 अप्रैल को करने का फैसला किया है। शायद उस दिन कोई ठोस फैसला सामने आएगा। ध्यान रहे, अदालत ने दिव्य फार्मेसी के खिलाफ शिकायतों पर कार्रवाई में देरी करने के लिए उत्तराखंड राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरण के अधिकारियों की भी जमकर खिंचाई की है। न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने अधिकारियों को जिस लहजे में चेताया है, वह गौर करने लायक है। आम तौर पर यह देखा गया है कि दवा या खान-पान व्यवसाय से जुड़ी गड़बड़ियों के प्रति जिम्मेदार अधिकारियों का रवैया लगभग आपराधिक रहता है। लोगों के जीवन से खिलवाड़ होता है, पर आधिकारियों की नींद नहीं टूटती। यह कोई नई बात नहीं है, आए दिन नकली या मिलावटी दवाएं पकड़ी जाती हैं, फिर भी अनेक कंपनियां इस स्याह कारोबार में अपने हाथ काले करने के लिए आती रहती हैं। ज्यादातर मामलों में अधिकारी तभी जागते हैं, जब लोग जान-माल से हाथ धोने लगते हैं। जब बहुत महंगी दवाओं का भी काला कारोबार हो सकता है, तब सामान्य दवाओं या खाने-पीने की चीजों में कितनी मिलावट होती होगी, सोचा जा सकता है। इसमें कोई दोराय नहीं कि ज्यादातर वस्तुओं की गुणवत्ता पर लोग शक करते हैं और समाज में इस पर खुलकर चर्चा होती है, पर जिम्मेदार अधिकारी तरह-तरह के बहानों में अपना मुंह छिपाए रहते हैं। ऐसे अधिकारियों पर अगर नकेल कसी जाए, तो अपराधी कारोबारियों पर भी लगाम लगेगी। अब समय आ गया है, जब देश के लोगों को भ्रामक विज्ञापनों से बचाया जाए। सवाल किसी एक कंपनी का नहीं है, सवाल पूरे बाजार का है। जहां एक से बढ़कर एक गलत विज्ञापनों की भरमार है। झूठे दावों की लंबी फेहरिस्त है, ऐसे दावों पर युद्ध स्तर पर प्रहार होना चाहिए। केवल उन्हीं अधिकारियों को नहीं, बल्कि दवा गुणवत्ता से जुड़े सभी अधिकारियों को सचेत हो जाना चाहिए। लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कतई मंजूर नहीं। पूरे देश में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बीमारियों के इलाज का दावा करने वाला कोई भी विज्ञापन प्रकाशित नहीं किया जाएगा।

आज का राशिफल

मेष व्यावसायिक योजना सफल होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होगी।

वृषभ बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें। धन लाभ होगा।

मिथुन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। वाणी पर नियंत्रण रखकर वाद विवाद की स्थिति को टाला जा सकता है। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा।

कर्क आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। व्यावसायिक योजना सफल होगी। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य शिथिल होगा। विरोधी परास्त होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

सिंह प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। अधीनस्थ कर्मचारी से तनाव मिलेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे।

कन्या दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। खान पान में संयम रखें। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।

तुला आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। प्रणय संबंधों में कटुता आ सकती है। विरोधियों का पराभव होगा।

वृश्चिक आर्थिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। नेत्र विकार की संभावना है। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

धनु पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। भाई या पड़ोसी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ससुराल पक्ष से लाभ मिलेगा। धन लाभ की संभावना है।

मकर पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। स्थानान्तरण व परिवर्तन के योग हैं। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

कुम्भ शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। वाणी पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होगी।

मीन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

कुदरती संसाधनों के दुरुपयोग से उपजा शहरी जल संकट

देविंदर शर्मा

कई साल पहले, मैंने टाइम्स पत्रिका में एक बहुत दिलचस्प लेख पढ़ा था 'केप टाउन के भारी जल संकट के बीच जीना कैसा होता है।' इस डर से कि आने वाले महीनों में शहर सूख जाएगा, दक्षिण अफ्रीका पहला शहर बन गया जिसने न केवल चेतावनी दी, बल्कि यह भी बताया कि जब नल सूख जाएंगे और दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भूजल ढूंढ़े से भी नहीं मिलेगा तो यह कितना भयानक होगा। पिछले कुछ हफ्तों में, बेंगलुरु जिस गंभीर जल संकट का सामना कर रहा है, उस पर कई लेख आए हैं, जिनमें शहर के कुछ हिस्सों में ऊंची इमारतों के निवासियों को पड़ोसी मॉल में शौचालय का उपयोग करने के लिए मजबूर होने की खबरें शामिल हैं, जो केप टाउन के दुखद कल्पनाओं वाले परिदृश्य के समान हैं। विशेष रूप से देश के एक अंग्रेजी दैनिक में प्रकाशित एक लेख 'जब नल सूख जाते हैं' में दिखाया गया कि कैसे कभी झीलों का शहर, जैसा कि इसे कभी जाना जाता था, एक शहरी कंक्रीट का जंगल बन गया, 'आर्थिक विकास' का शिकार हो गया। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की सीमा मुंदोली ने अपने विचारोत्तेजक लेख में वास्तव में पाठकों को तीन 'आर' यानी- हमारे रिश्ते, हमारे अधिकार और हमारी ज़िम्मेदारियां - पर विचार करने के लिए प्रेरित किया कि कैसे शिक्षित लोगों ने सपनों को इतनी तेज़ी से धूमिल होने दिया है। यहीं पर मुझे लगता है कि बेंगलुरु के जल संकट की तुलना पंजाब के भूजल में चिंताजनक गिरावट से करना महत्वपूर्ण हो गया है। पानी की अधिक खपत करने वाली धान की खेती को तेजी से भूजल की कमी के पीछे प्रमुख कारण बताया जा रहा है, जबकि 138 विकास खंडों में से 109 से अधिक ब्लॉक पहले से ही डार्क जोन, जहां निकासी की दर पुनः आपूर्ति की दर से अधिक है, में आते हैं। पानी की तलाश ने किसानों को अधिक गहराई तक जाने के लिए सबमर्सिबल पंप स्थापित करने के लिए उकसाया है, और कई मामलों में इसे सीधे जलीय चट्टानी परत से प्राप्त किया है। कई अध्ययनों से पता चला है कि पंजाब का भूजल जल्द ही खत्म हो जाएगा, कुछ का तो यह भी अनुमान है कि भूजल 17 साल से अधिक नहीं टिकेगा। पंजाब में, कई दशकों से फसल विविधीकरण का सुझाव दिए जाने के बावजूद, धान का क्षेत्रफल असल में बढ़ा है। इस वर्ष, पंजाब में धान का सबसे अधिक रकबा और सर्वाधिक उपज भी दर्ज की गई। हालांकि ऐसा माना जाता है कि धान की फसल में 1 किलो चावल पैदा करने के लिए 5,000 लीटर से अधिक पानी की आवश्यकता होती है। हालांकि यह अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होता है। पंजाब केंद्रीय भंडार में चावल का सबसे बड़ा योगदानकर्ता भी है। इसलिए यह खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिर भी, ऐसा इसलिए है क्योंकि केंद्र व राज्य सरकारें धान के लिए आर्थिक रूप से कोई ठोस विकल्प लेकर नहीं आई हैं, फसल विविधीकरण अभी तक जड़ें नहीं जमा सका है। आश्चर्य होता है कि अगर फसल विविधीकरण पंजाब के लिए एक समाधान है, तो बेंगलुरु के मामले में यह 'शहर विविधीकरण' क्यों नहीं हो सकता? महानगर की वहन क्षमता को देखते हुए, शहर अब चरमरा रहा है। 2011 में 8.7 मिलियन से, अगले 10 वर्षों में जनसंख्या बढ़कर 2021 तक अनुमानित 12.5 मिलियन हो गई। अब तक यह 15 मिलियन के करीब होगी। इसलिए जनसंख्या में इतनी अनियंत्रित वृद्धि की अनुमति देने के लिए नीति निर्माताओं को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। सभी दिशाओं में फैलने के बजाय, बेंगलुरु शहर का विविधीकरण किया जा सकता था - पड़ोसी शहरों को आबादी के प्रवाह को संभालने के लिए प्रोत्साहित करके। किसी भी स्थिति में, 'शहरों और समुदायों' का सतत विकास एसडीजी 11 के अंतर्गत आता है, और यह एसडीजी 8 से भी जुड़ा है जो 'सभ्य कार्य और आर्थिक विकास' की बात करता है। 'शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लोचशील और टिकाऊ' बनाना एसडीजी 11 द्वारा निर्धारित कार्यों में से एक है। स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए शहरी फैलाव को प्रतिबंधित करना शहर की नगर परिषदों का कार्य होना चाहिए था। पानी की बर्बादी को कम करने के लिए व्यावहारिक कदम उठाएं। ऐसे तदर्थ निर्णय ऐसे किसी संकट का समाधान नहीं कर सकते जो कि भयावह भविष्य की ओर इशारा कर रहा है। साथ ही, जिस तरह से झीलों और जल निकायों का नेटवर्क शहरीकरण की भेंट चढ़ गया है, उसे कुछ अपरिहार्य रूप में देखा जाता है। इसके विपरीत, यह प्रशासनिक ताकत के दुरुपयोग के अलावा और कुछ नहीं है जिसने झीलों को बिल्डरों द्वारा हड़पने की अनुमति दी। कई झीलें शहर द्वारा प्रतिदिन फेंके जाने वाले भारी कूड़े-कचरे का डंपिंग ग्राउंड बन गई हैं। झीलों को पुनर्जीवित करने के जन आंदोलन के बावजूद प्रशासन नींद में है। अब भी, उदाहरण के लिए, सभी की निगाहें शहर के पूर्वी हिस्से में जुन्नसांद्रा झील के 24 एकड़ में आवास परिसर स्थापित करने पर हैं, जो सूख गई है। आईटी हब के आसपास, हलनायकनहल्ली झील सभी प्रकार के मलबे और कचरे का डंपिंग ग्राउंड है। जैसा कि किसी ने कहा, 'कई झीलें बारहमासी बन गई हैं- कचरे और मलबे के साथ!' धान की बढ़ती खेती के साथ-साथ पंजाब के किसानों को पराली जलाने के लिए भी दोषी ठहराया जाता है। ऐसी गलती करने वाले किसानों के खिलाफ एफआईआर, जुर्माना, राजस्व रिकॉर्ड में रेड एंट्री और सब्सिडी वाले इनपुट की आपूर्ति को प्रतिबंधित करने जैसे कुछ अन्य कदम उठाए जाते हैं। मगर प्रशासनिक अधिकारियों और रियल एस्टेट कंपनियों पर एफआईआर क्यों नहीं दर्ज की जाती जिन्होंने उस जमीनों पर कब्जा कर लिया जहां पर कभी झीलें और जलाशय होते थे। पर्यावरणीय चूक के लिए जब शहरी बाशिंदों और किसानों को दंडित करने की बात आती है तो दोहरे मानदंड किसलिए होने चाहिये? शहरियों से नरमी का बर्ताव किया जाता है जबकि सभी तरह की दंडात्मक कार्रवाई किसानों पर की जाती है? हरेक तरह की आर्थिक गतिविधि के लिए हमेशा पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप की बात की जाती है। परंतु जब जल संकट जैसी बड़ी समस्याओं को संबोधित करने की बात आती है तो निजी क्षेत्र किसी साझे प्रयास में हाथ मिलाने के लिए इच्छुक नजर नहीं आता है। रोचक तौर पर, एक फेसबुक पोस्ट में सुझाव दिया गया था कि नारायणमूर्ति ने अपने 4 माह के पोते को 240 करोड़ रुपये की कीमत का जो शेयर गिफ्ट किया था उसका बेहतर इस्तेमाल हो सकता था यदि ऐसी राशि उस भीषण जल संकट के लिए दानस्वरूप प्रदान की जाती जिसका असर शहर के भविष्य पर हो रहा है। बहरहाल, जिस शहर में आप रहते हैं उसके किसी असाधारण संकट की चपेट में आने के समय उसके लिए खड़े होने की सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की निश्चित तौर पर सामूहिक जिम्मेदारी होती है। पुलित्जर पुरस्कार विजेता लेखक जेरेड डायमंड ने अपनी पुस्तक 'कोलैप्स' में ऐसे कई समाजों पर दृष्टि डाली है जो अपने कुदरती संसाधनों का दुरुपयोग करने के चलते बर्बाद हो गए। जेरेड कंबोडिया स्थित अंगकोर वाट और मोहनजोदड़ो , अब पाकिस्तान में, के पतन की बात करते हैं, जो फलती-फूलती बसाहटों के दो उदाहरण हैं जो बाद में नष्ट हो गयी थीं। उम्मीद करें कि आधुनिक समाज विफलताओं को नहीं दोहराएगा और प्राकृतिक संसाधनों के घोर कुप्रबंधन के चलते वृद्धिमान शहर नष्ट नहीं होंगे, और वह भी 21वीं सदी में तो नहीं।

लेखक कृषि एवं खाद्य विशेषज्ञ हैं।

इंडियन स्पेस इकोनॉमी को विस्तार की कवायद

अंतरिक्ष में विदेशी निवेश

डॉ. शशांक द्विवेदी

पिछले दिनों भारत सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में विदेशी और निजी कंपनियों को आकर्षित करने के प्रयासों के तहत उपग्रहों के उपकरण बनाने में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश को अनुमति देकर अंतरिक्ष क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) मानदंडों को आसान बना दिया। सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में संशोधन को मंजूरी दे दी है। असल में नियम आसान होने से निवेश बढ़ेगा और इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। एफडीआई मानकों को लागू करने के लिए उपग्रह उप-क्षेत्र को तीन अलग-अलग गतिविधियों में बांटा गया है। प्रक्षेपण यान, उपग्रह और उपग्रह घटक संशोधित नीति के तहत लॉन्च वाहनों में 49 प्रतिशत तक, उपग्रहों में 74 प्रतिशत और उपग्रह घटकों में 100 प्रतिशत तक एफडीआई की अनुमति है। अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी को बढ़ाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने पिछले साल नई भारतीय अंतरिक्ष नीति का ऐलान किया था। जिसमें अंतरिक्ष क्षेत्र की संभावनाओं का लाभ उठाने के लिए की बात कही गई थी। इसी के तहत जून, 2020 में केंद्र सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र के सुधारों और निजी कंपनियों को इसरो के संसाधनों और बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने में सक्षम बनाने के लिए एक नई एजेंसी इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड अथॉराइजेशन सेंटर की स्थापना की थी। उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, भारत में अंतरिक्ष स्टार्ट-अप की संख्या 2014 में केवल एक थी, वह 2023 में बढ़कर 189 हो गई। भारतीय अंतरिक्ष स्टार्ट-अप में निवेश 2023 में बढ़कर 124.7 मिलियन डॉलर हो गया। फिलहाल, भारतीय स्पेस इकोनॉमी का आकार तकरीबन 8.4 अरब अमेरिकी डॉलर है, जो ग्लोबल स्पेस इंडस्ट्री का लगभग 2 फीसदी है। इनस्पेस के अनुसार 2033 तक देश की स्पेस इकोनॉमी 44 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगी और ग्लोबल स्पेस इंडस्ट्री में भारत की हिस्सेदारी बढ़कर 8 प्रतिशत हो जाएगी। यह मुकाम हासिल करने में प्राइवेट सेक्टर महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। स्पेस सेक्टर में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति देने का भारत का निर्णय एक रणनीतिक कदम है। यह भारतीय स्पेस इंडस्ट्री में निवेश करने और साथ काम करने के इच्छुक विदेशी खिलाड़ियों के लिए यहां प्रवेश की बाधाओं को कम करेगा। भारत की किफायती स्पेस इंडस्ट्री बड़ी संख्या में विदेशी निवेशकों को लुभाने की काबिलियत रखती है। सूर्य मिशन, चंद्रयान-3 मिशन की सफलता से भारत दुनिया के टॉप-5 अंतरिक्ष कार्यक्रम वाले देशों में शामिल है। कम लागत वाले हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम से ज्यादातर देश जुड़ना चाहते हैं। स्पेस सेक्टर में एफडीआई को लेकर सरकार के पास दो विकल्प थे। एक तो टेलीकॉम सेक्टर की तरह वह स्पेस सेक्टर को भी 100 प्रतिशत विदेशी निवेश के लिए खोल दे या इसको 74 प्रतिशत पर रखा जाए, जैसा डिफेंस सेक्टर में है। सरकार ने बीच का रास्ता निकालते हुए पूरे स्पेस सेक्टर को तीन हिस्से में बांट दिया। लॉन्च व्हीकल के सेगमेंट में सबसे कम 49 प्रतिशत विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है। इसका कारण रणनीतिक है, क्योंकि जो टेक्नोलॉजी, लॉन्च व्हीकल और रॉकेट में इस्तेमाल होती है, वही टेक्नोलॉजी मिसाइल और आईसीबीएम में भी लगती है। दूसरा कारण यह है कि सैटेलाइट जहां से भी लॉन्च की जाती है, वहां कुछ सॉवरेन जिम्मेदारियां होती हैं। जब सॉवरेन जिम्मेदारी देश पर है, तो उसका नियंत्रण देश के बाहर नहीं होना चाहिए। सरकार ने 74 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति उन जगहों पर दी है जो डिफेंस के समतुल्य हैं। जैसे सैटेलाइट, डेटा आदि। कंपोनेंट तथा अन्य मामलों में, जो टेलीकॉम के समतुल्य हैं, उनमें 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति दी गई है। वैश्विक स्पेस इकोनॉमी का बाजार तेजी से बढ़ रहा है, भारत भी तेजी से इस क्षेत्र में कदम बढ़ा रहा है। कमर्शियल सैटेलाइट लॉन्चिंग में भारत पर भरोसा लगातार बढ़ रहा है। एक समय ऐसा भी था जब अमेरिका ने भारत के उपग्रहों को लॉन्च करने से मना कर दिया था। आज स्थिति ये है कि अमेरिका सहित तमाम देश खुद भारत के साथ व्यावसायिक समझौता करने को इच्छुक हैं। अब पूरी दुनिया में सैटेलाइट के माध्यम से टेलीविजन प्रसारण, मौसम की भविष्यवाणी और का दूरसंचार का क्षेत्र बहुत तेज गति से बढ़ रहा है। कम लागत और सफलता की गारंटी इसरो की सबसे बड़ी ताकत है जिसकी वजह से स्पेस इंडस्ट्री में आने वाले समय में भारत का बोलबाला होगा। इंडियन स्पेस एसोसिएशन और अर्न्स्ट एंड यंग की 'डेवलपिंग द स्पेस इको सिस्टम इन इंडिया' के नाम से प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार स्पेस लॉन्चिंग का बाजार 2025 तक बहुत ही तेजी से बढ़ेगा। इस रिपोर्ट में भारत में इसके सालाना 13 फीसदी के हिसाब से वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। इसके पीछे की मुख्य वजह स्पेस के क्षेत्र में निजी भागीदारी का बढ़ना तो है ही, साथ ही नई-नई तकनीक आने और लॉन्चिंग सेवाओं की लागत में कमी की वजह से भी स्पेस इकोनॉमी तेजी से बढ़ेगी। अर्न्स्ट एंड यंग की रिपोर्ट के मुताबिक 2020 में वैश्विक स्पेस इकोनॉमी का आकार 447 अरब डॉलर तक था जिससे 2025 तक 600 अरब डॉलर के पार जाने की उम्मीद है।

लेखक मेवाड़ यूनिवर्सिटी में डायरेक्टर हैं।

विचार मंथन

आम आदमी पार्टी के आरोप सच्चाई की कसौटी पर?

(लेखक- सनत जैन)

आम आदमी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी और ईड़ी पर लंबे समय से आरोप लगाती आ रही है। भारतीय जनता पार्टी ने आम आदमी को खत्म करने के लिए सीबीआई और केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय का उपयोग कर रही है। शराब घोटाले के आरोप तथा लोटस अभियान के माध्यम से आम आदमी पार्टी के विधायकों और पार्टी के पदाधिकारियों को तोड़ने की कोशिश की जा रही है। पिछले कई माह से यह आरोप आम आदमी पार्टी के नेता लगाते रहे हैं। पिछले दो साल से शराब घोटाले की जांच ईड़ी कर रही है। इसमें दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येंद्र जैन, मनीष सिसोदिया और संजय सिंह को जेल जाना पड़ा। ईड़ी को अभी तक मनी ट्रेल का कोई सबूत नहीं मिला है। इसी आधार पर हाल ही में संजय सिंह की जमानत 6 महीने बाद सुप्रीम कोर्ट से मंजूर हुई है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद भी आम आदमी पार्टी छोड़कर कोई भी विधायक बाहर नहीं निकला। संजय सिंह की जमानत के बाद दिल्ली का नजारा ही बदल गया। आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच में सड़कों में संग्राम शुरू हो गया। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जेल में बंद है। उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने से इनकार कर दिया। वह जेल से सरकार चलाने की बात कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी भी अब आर पार की इस लड़ाई में अब सुनार की तरह टुकटुक करने की बजाय, लोहार की तरह, एक ही हथौड़ा मारकर आम आदमी पार्टी को निपटाने की कोशिश करते हुए नजर आ रही है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय ईड़ी ने दिल्ली के समाज कल्याण मंत्री राजकुमार आनंद के यहां कई महीने पहले छापा डाला था। करीब 23 घंटे तलाशी लेकर पूछताछ की थी। उसके बाद से यह मामला ठंडा पड़ा हुआ था। हाल ही में केंद्रीय परिवर्तन निदेशालय ने 12 अप्रैल को पुनः पूछताछ के लिए समन जारी किया है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय का समन मिलने के बाद और 12 तारीख के पहले, राजकुमार आनंद ने दिल्ली सरकार के मंत्री पर और विधायक पद से इस्तीफा दे दिया है। आनंद ने पत्रकार वार्ता में कहा, कि मैं भ्रष्ट आचरणों के साथ आम आदमी पार्टी के नेताओं में नाम दर्ज नहीं करना चाहता हूं। आम आदमी पार्टी के पास शासन करने की नैतिकता नहीं बची है। यह कहते हुए उन्होंने आम आदमी पार्टी को छोड़ने की बात कही है। वहीं सांसद संजय सिंह का कहना है, समाज कल्याण मंत्री राजकुमार आनंद के यहां पर केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय ने पिछले साल छापा डाला था। हाल ही में जब ईड़ी ने पुनः समन जारी किया। उसके बाद से वह दबाव में थे। परिवार की दबाव और गिरफ्तारी से बचने के लिये राजकुमार आनंद ने आम आदमी पार्टी को छोड़ा है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आम आदमी पार्टी को खत्म करना चाहती है। जिसके लिए ईड़ी का उन्होंने इस्तेमाल किया गया है। दिल्ली के उपराज्यपाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री के निजी सचिव को हटा दिया है। उपराज्यपाल आम आदमी पार्टी की सरकार पर रोज निशाना साध रहे हैं। जिस तरीके से भारतीय जनता पार्टी सड़कों पर आकर केजरीवाल के खिलाफ लड़ाई लड़ रही है। दिल्ली के उपराज्यपाल और केंद्र सरकार जिस तरह से दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का इस्तीफा कराने या सरकार को बर्खास्त करने के विकल्प तैयार कर रहे हैं। उससे दिल्ली की राजनीति में एक तूफान आ गया है। इसका असर सारे देश भर में हो रहा है। लोकसभा चुनाव का प्रचार शुरू हो चुका है। इस बार एनडीए और इंडिया गठबंधन में सीधा मुकाबला होने जा रहा है। दिल्ली में जो कुछ हो रहा है उसका असर देश की राजनीति में पडना तय है। आम आदमी पार्टी का आरोप है लोटस अभियान पिछले 2 साल से चलाने की कोशिश भाजपा कर रही है। ईड़ी के माध्यम से आम आदमी पार्टी के नेताओं को जबरिया जेल भेजा जा रहा है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय की पिछले 2 साल से जांच ही चल रही है। नेताओं को जेल में बंद रखा जा रहा है। उन्हें लोकसभा चुनाव में प्रचार भी नहीं करने दिया जा रहा है। पार्टी तोड़ने की जो सूचनायें पार्टी को मिल रही थी। समय-समय पर पार्टी ने उसे उजागर किया। मीडिया हम से ही सवाल पूछता था। उन्होंने कहा जल्द ही राजकुमार आनंद भाजपा में प्रवेश ले लेंगे। ऐसा ही लोटस अभियान भाजपा ने कई राज्यों में पहले भी चलाया है। इसी तरीके से विधायकों को तोड़कर विपक्षी दलों की राज्य सरकारों को अस्थिर करके भाजपा की सरकार बनाई है। सुप्रीम कोर्ट में अरविंद केजरीवाल ने जमानत के लिए याचिका दायर की है। संभवतः सोमवार को सुनवाई होगी। इतना तो स्पष्ट है, कि आम आदमी पार्टी जो आरोप लगाती थी। इसकी सत्यता अब सामने आने लगी है। अब आरोप सत्यता की कसौटी में कसा जाना है। इसके बाद किसके आरोप में कितनी दम है। न्यायालय की कसौटी में कसने के बाद ही आरोपों की सत्यता का पता चल सकेगा।

संक्रामक रोगों को आम तौर पर लोग संजीदगी से नहीं लेते। भारत में ज्यादातर लोग मुंहासों के इलाज के लिए या तो घरेलू नुस्खे अपनाते हैं या उन्हें पूरी तरह से अनदेखा कर देते हैं। बहुत कम लोग होते हैं जो डॉक्टर के पास जा कर इलाज कराते हैं। ज्यादातर लोग इस बात से अनजान हैं कि मुंहासे पैदा करने वाला बैक्टीरिया एमआरएसए जानलेवा भी हो सकता है।

जानलेवा बैक्टीरिया एमआरएसए

मुंहासे पैदा करने वाला मेथिसिलिन रेसिस्टेंट स्टेफीलोकोकस ऑरेउस या एमआरएसए एक ऐसा बैक्टीरिया है. जो आम तौर पर त्वचा पर आक्रमण करता है। अमेरिका में ज्यादातर त्वचा के रोग इसी विषाणु के कारण होते हैं। मुंहासों तक तो इन पर काबू कर लिया जाता है, लेकिन अगर यह किसी चोट द्वारा खून के अंदर पहुंच जाएं, तो यह शरीर को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। खास तौर से ऑपरेशन के दौरान अगर ध्यान न दिया जाए तो यह पूरे शरीर में इन्फेक्शन फैला सकता है।

एंटी बायोटिक का असर नहीं

एमआरएसए को सबसे पहली बार 1961 में खोजा गया था। इससे छुटकारा पाने के लिए एंटी बायोटिक का इस्तेमाल भी किया गया, लेकिन इतने वर्षों में इन विषाणुओं ने खुद को इन दवाइयों के हिसाब से ढाल लिया है। मेथिसिलिन, अमोक्सिसिलिन, मेथिसिलिन रेसिस्टेंट स्टेफीलोकोकस ऑरेउस या एमआरएसए पेनिसिलिन, ओक्ससिलिन जैसे ज्यादातर एंटी बायोटिक अब इन पर काम करने में विफल रहते हैं। वैज्ञानिक अब नए एंटी बायोटिक बनाने में लगे हैं।

यूरोप में लाखों बीमार

यूरोप में हर साल चालीस लाख से अधिक लोग अस्पतालों में इन्हीं एमआरएसए विषाणुओं का शिकार होते हैं। इनमें से 35,000 जर्मनी में हैं। एक अध्ययन के अनुसार यूरोप में हर साल 37,000 लोग इसलिए अपनी जान गंवा बैठते हैं, क्योंकि वे अस्पताल में आकर बीमार पड़ते हैं और समय रहते उनका सही इलाज नहीं हो पाता। यूरोपीय संघ कोशिश कर रहा है कि अस्पतालों में साफ-सफाई के मापदंड अब और भी सख्त कर दिए जाएं।

मरीज की पहचान जरूरी

जर्मन सोसाइटी फॉर हॉस्पिटल हाइजीन चाहता है कि जर्मनी के हर अस्पताल में मरीज को भर्ती करने से पहले उसकी पूरी तरह से जांच कर ली जाए कि कहीं वह अपने साथ इस कीटाणु को तो नहीं लाया है। ऐसा करना इसलिए जरूरी है, ताकि मरीज की पहचान कर ली जाए और उसे बाकी मरीजों से अलग रखा जाए। जर्मनी, फ्रांस और पोलैंड में 25 प्रतिशत मरीजों में यह कीटाणु पाया गया। स्पेन और तुर्की जैसे अन्य दक्षिण यूरोपीय देशों में हालात और भी खराब हैं। वहां 50 प्रतिशत मरीज इस विषाणु से संक्रमित हैं।

एमआरएसए का बढ़ता खतरा

पिछले वर्षों में एमआरएसए के केस इतनी तेजी से बढ़े हैं कि अब इसे कामकाज संबंधी बीमारी के रूप में देखा जा रहा है। जर्मन सोसाइटी फॉर हॉस्पिटल हाइजीन के अनुसार जर्मनी में 80 प्रतिशत अस्पतालों में एमआरएसए का खतरा है। इन अस्पतालों से कड़े रूप से यह कहा जा रहा है कि जो लोग साल में एक से ज्यादा बार अस्पताल में भर्ती हो रहे हों, उनकी पूरी जांच की जाए।

क्या आप जानते हैं?

क्या है डीप वैन थ्रोमयोसिस यानी 'डी वी टी'? लम्बी दूरी की थकाऊ उड़ान की कीमत अकसर पैरों और हमारी जंघाओं को चुकानी पड़ती है।

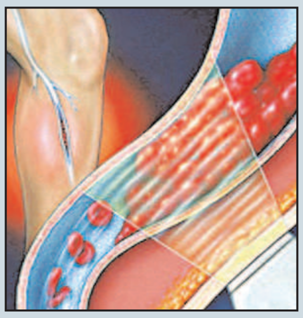

लक्षण

लम्बी दूरी उड़ान के दौरान काल्फ जैसी डीप वैन्स (निचली शिराओं में) खून का थक्का बनने लगता है। साथ में बेहद का दर्द और इन्फ्लेमेशन होने लगता है। बस यही है 'डीप वैन थ्रोम -योसिस' के लक्षण।

समाधान

डी वी टी का समाधान भी सीधा सरल है। हर एक घंटे के बाद प्लेन में एक सिरे से दूसरे तक टहलिए । पैर लटकाकर बैठे मत रहिए। खूब पानी पीजिए (हाई -डरे -टिड रखिये शरीर को) हो सके तो किसी भी प्रकार पैरों को एलीवेटिड रखिए । वैसे आप को बता दें कि आजकल फ्लाइट के दौरान पहने जाने वाले विशेष मौजे (सॉक्स)भी उपलब्ध हैं ।

यह फ्लाईट सॉक्स खास तौर पर डिजाइन किए गए कम्प्रेशन होजरी से तैयार किये जाते हैं। ये रक्त प्रवाह को पैरों की और मोड़ कर दिल तक ले जाते हैं। यह पैरों पर इस तरह से दबाव (प्रेशर) डालते हैं, जिससे दर्द घुटनों से पैरों के टखनों (एंकल) की ओर मुड़ जाता है।

हाउस वाइफ रीता आजकल बहुत चिंतित रहने लगी है। दरअसल महीने में यह तीसरी बार है की वह अपने 6 वर्षीय बेटे रिंकू को स्थानीय अस्पताल मे दिखाने लाई है। रिंकू को बार बार दस्त हो रहे हैं। मात्र 4 दिन पहले ही रिंकू को इसी अस्पताल से छुट्टी मिली थी, तब उसे उल्टी दस्त की वजह से 2 दिन के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया था।

घर के बर्तन भी फैलाते हैं रोग

बाल रोग विशेषज्ञ ने रीता को बताया की रिंकू की बीमारी खाने से उत्पन्न बैक्टीरिया की वजह से हुई है। इसलिए उसे रिंकू की खानपान की आदतों के प्रति खास तौर पर चौकन्ना रहना होगा। डॉक्टर ने रीता को यह भी बताया कि अपने बच्चे को खाना देते वक्त उसे क्या करना है और क्या नहीं।

डॉक्टर द्वारा दी गई सूची को पूरा पढ़ने के बाद लगा जैसे रीता रो पड़ेगी, क्योंकि इस सूची में ऐसा कोई काम नहीं था जो उसने न किया हो। एक शिक्षित व समझदार मां के तौर पर रीता ने बहुत अच्छी तरह अपने बच्चे की सेहत व भलाई के हरसंभव कदम उठाया था।

रीता ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि रिंकू वहीं पानी पीए जो छना व उबला हुआ हो। उसने अपने बच्चे को हमेशा ताजा बना हुआ भोजना दिया। वास्तव में रीता के पति व उसकी सहेलियां उसका यह कह कर मजाक भी उड़ाते थे कि अपने बेटे के मामले में वह कुछ ज्यादा ही हाइजीनिक है। रीता ने बहुत सोचा, लेकिन फिर भी वह उस कारण को नहीं ढूंढ़ पाई, जिस वजह से उसके बेटे को बार बार संक्रमण हो रहा था।

उदाहरण मात्र है

रीता तो मात्र एक ही उदाहरण है। हमारे देश मे ऐसी हजारों माताएं हैं जो उस कारण को खोज रही हैं, जिसकी वजह से उनके बच्चे व परिवार के अन्य सदस्य बार बार बीमार पड़ते हैं। किंतु लगातार प्रयासों के बावजूद भी वे इन संक्रामक बीमारियों को अपने घर से दूर नहीं रख पा रही हैं।

वरिष्ठ चिकित्सकों के अनुसार

जब हम भोजन की साफ-सफाई के बारे में बात करते हैं तो बर्तनों का जिक्र शायद ही कभी आता हो। वास्तव में बर्तन भोजन संबंधी स्वच्छता का सबसे अहम हिस्सा हैं, क्योंकि बर्तनों में ही खाना पकाया, परोसा और ले जाया जाता है। जिन बर्तनों को ठीक से धोया नहीं जाता, उनमें ऐसे जीवाणु पनप जाते हैं, जो रोगकारक होते हैं और ऐसे बर्तनों से बीमारी फैल सकती है।''

तो क्या है इसका हल?

सर्वश्रेष्ठ तरीका तो यही है कि बर्तनों को रोगाणुओं से मुक्त किया जाए। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सलाह दी जाती है कि बर्तनों को धोने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री में जीवाणुनाशक एजेंट होना चाहिए। लेकिन यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि बर्तन धोने के लिए जो रासायनिक एजेंट इस्तेमाल किए जाएं वे सुरक्षित हों और उनसे किसी किस्म का नुकसान न हो। साइक्लोजैन ऐसा रोगाणुरोधी एजेंट हैं, जो इस उद्देश्य को पूरा करते हैं।

उद्देश्य को पूरा करते हैं साइक्लोजैन

साइक्लोजैन मानव इस्तेमाल के लिए सुरक्षित हैं और ये बर्तनों से 85 प्रतिशत बैक्टीरिया को साफ करने में सक्षम हैं। ये रसायन बैक्टीरिया को धो डालते हैं और लगभग 8 घंटों तक उन्हें फिर से पनपने से भी रोकते हैं। इस वक्त भारतीय बाजारों में कई ब्रांड नामों से 'डिश वॉश' फॉर्मूला उपलब्ध हैं, जिसमें साइक्लोजैन मौजूद हैं।

अनदेखा कर देते हैं अहम पहलू

- साफ-सफाई के सभी मानकों का पालन करने पर भी हम में से अधिकतर लोग भोजन दूषित होने के सबसे अहम् पहलू को अनदेखा कर देते हैं- वे बर्तन जिनमें हम खाना पकाते, रखते और खाते हैं।
- आम तौर पर प्लेटें और टिफिन को सिर्फ पानी से धो लिया जाता है। हम सभी जानते हैं कि नल से आने वाला पानी रोग फैलाने वाले जीवाणुओं को लिए होता है।
- भले ही आप दो-तीन बार पानी को छानें या उबालें या फिर गर्मागर्म खाना बना कर परोसें; लेकिन आपकी इन कोशिशों पर पानी फिर जाएगा, अगर यह खाना-पानी ऐसे बर्तनों में परोसा जाए, जिन्हें रोगाणुओं से मुक्त नही किया गया है।
- गिलास, कटोरी, थाली, टिफिन आदि में मौजूद बैक्टीरिया भोजन व पानी में बड़ी तेजी से मिल जाते हैं। एक बार भोजन या पानी दूषित हो गए तो फिर वे हमेशा के लिए दूषित ही रहेंगे।

मार्केट कैप के हिसाब से तीसरी बड़ी एयरलाइन कंपनी बनी इंडिगो

मुंबई। देश की सबसे बड़ी एयरलाइन कंपनी इंडिगो एयरलाइंस मार्केट कैप के हिसाब से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी एयरलाइन कंपनी बन गई है। इंडिगो का शेयर बुधवार को साढ़े चार फीसदी की तेजी के साथ 3795 रुपये के स्तर पर बंद हुआ। जिससे इसका मार्केट कैप 1.47 लाख करोड़ रुपये का हो गया। इस स्टॉक में जबरदस्त एक्शन है और यह ऑल टाइम हाई पर कारोबार कर रहा है। मालूम हो कि दिसंबर 2023 में इंडिगो ने यूनाइटेड एयरलाइन को पीछे छोड़ दुनिया की छठी सबसे बड़ी एयरलाइन बनी थी। जानकारी के मुताबिक, मार्केट कैप के लिहाज से डेल्टा एयर और रायनएयर होल्डिंग्स इससे बड़ी एयरलाइन कंपनियां है, जिनका मार्केट कैप 30 बिलियन डॉलर और 26 बिलियन डॉलर से ज्यादा है। इंडिगो के शेयर ने 10 अप्रैल को 3812 रुपये का ऑल टाइम हाई बनाया।एक हफ्ते में इस शेयर ने करीब 9 फीसदी, दो हफ्ते में 7 फीसदी, एक महीने में 22 फीसदी, तीन महीने में 23 फीसदी, छह महीने में 51 फीसदी, एक साल में 100 फीसदी, दो साल में 90 फीसदी और तीन साल में 130 फीसदी का रिटर्न दिया है।

सरकार ने तंबाकू उत्पादों के पंजीकरण की तारीख बढ़ाई

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने पान मसाला, गुटखा और इसी तरह के तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं के पंजीकरण और मासिक रिटर्न दाखिल करने के लिए विशेष प्रक्रिया के कार्यान्वयन की तारीख 15 मई तक बढ़ा दी है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने इससे पहले ऐसे निर्माताओं के पंजीकरण और मासिक रिटर्न दाखिल प्रक्रिया एक अप्रैल 2024 से क्रियान्वित करने की जनवरी में घोषणा की थी। वित्त विधेयक 2024 के जरिए जीएसटी कानून में भी संशोधन किया गया। इसमें कहा गया कि पान मसाला, गुटखा और इसी तरह के तंबाकू उत्पादों के निर्माताओं को एक लाख रुपये तक का जुर्माना देना होगा, यदि वे एक अप्रैल से अपनी पैकिंग मशीनरी को जीएसटी अधिकारियों के साथ पंजीकृत करने में विफल रहते हैं। सीबीआईसी ने एक अधिसूचना के जरिए इस विशेष प्रक्रिया के कार्यान्वयन की तारीख 45 दिन बढ़ाकर 15 मई तक कर दी है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भारत में बढ़ती दिलचस्पी से देश को हो रहा लाभः संरा रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भारत को लेकर बढ़ती दिलचस्पी से देश को फायदा हो रहा है। ये कंपनियां विकसित अर्थव्यवस्थाओं की आपूर्ति व्यवस्था को विविध रूप देने की रणनीतियों के संदर्भ में भारत को एक वैकल्पिक विनिर्माण आधार के रूप में देख रही हैं। इससे भारत में निवेश मजबूत बना हुआ है। संयुक्त राष्ट्र की हाल ही में अजारी एक रिपोर्ट में यह कहा गया है। सतत विकास वित्तपोषण रिपोर्ट 2024ः विकास के लिए वित्तपोषण एक चौराहे पर (एफएसडीआर 2024) शीर्षक से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास के लिए जरूरी वित्तपोषण अंतर को कम करने के लिए बड़े पैमाने पर राशि जुटाने को लेकर तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है। रिपोर्ट के अनुसार, वित्तपोषण का यह अंतर अब सालाना 4,200 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। कोविड-19 महामारी से पहले यह 2,500 अरब डॉलर था। इस बीच, वैश्विक स्तर पर बढ़ते राजनीतिक तनाव, जलवायु आपदाओं और जीवनयापन के स्तर पर वैश्विक संकट ने अरबों लोगों को प्रभावित किया है। इससे स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य विकास लक्ष्यों के मामले में प्रगति प्रभावित हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर निवेश नरम रहने की संभावना है। इसमें कहा गया है कि इसके विपरीत दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत में निवेश मजबूत बना हुआ है। भारत को लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बढ़ती रुचि से देश को लाभ हो रहा है। ये कंपनियां इसे विकसित अर्थव्यवस्थाओं की आपूर्ति व्यवस्था को विविध रूप देने की रणनीतियों के संदर्भ में एक वैकल्पिक विनिर्माण आधार के रूप में देख रही हैं।

भारत का आर्थिक प्रदर्शन अच्छा, इसे बरकरार रखने की जरूरतः ईएसी-पीएम सदस्य

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी -पीएम) के सदस्य संजीव सान्याल ने कहा कि देश की आर्थिक वृद्धि का प्रदर्शन बेहतर है और इसे बरकरार रखने के लिए अब कुछ प्रयासों की जरूरत होगी, क्योंकि बाहरी माहौल की चिंताएं पूरी तरह दूर नहीं हुई हैं। यदि मौसम की स्थिति और मानसून अनुकूल रहा तो लगता है कि खाने की वस्तुओं की कीमतें कम हो जाएंगी। यह ऐसी स्थितियां बनाएगा जो सात प्रतिशत या उससे अधिक की वृद्धि के लिए अनुकूल होगी, जिससे कुछ हद तक अनिश्चित वैश्विक परिस्थितियों से भी आगे बढ़ा जा सकेगा। सान्याल ने एक साक्षात्कार में कहा कि वर्ष 2023 के अंतिम तीन महीनों में भारत की अर्थव्यवस्था उम्मीद से बेहतर 8.4 प्रतिशत बढ़ी जो डेढ़ साल में सबसे तेज है। अक्टूबर-दिसंबर में वृद्धि दर पिछले तीन वर्षों में 7.6 प्रतिशत से अधिक रही और इससे पिछले वित्त वर्ष के अनुमान को 7.6 प्रतिशत तक ले जाने में मदद मिली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वित्त वर्ष 2024-25 में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद सदस्य ने कहा कि पश्चिम एशिया में तनाव, यूक्रेनी हमलों में रूसी तेल सुविधाओं का नष्ट होना तथा कई अन्य कारणों से हाल ही में तेल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई और यह 91 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल तक पहुंची। ऊंचे खाद्य कीमतों के दीर्घकालिक समाधान के बारे में पूछे जाने पर सान्याल ने कहा कि ऊंची खाद्य कीमतें काफी हद तक उत्पादन संबंधी नहीं बल्कि वास्तव में भंडारण की समस्या है।

टीआईई अध्यक्ष ने कहा- भारत को लेकर उत्साहित है सिलिकॉन वैली

वाशिंगटन। सिलिकॉन वैली भारत को लेकर बहुत उत्साहित है, जिसके नेतृत्व ने उद्यमिता के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई है। यह बात टीआईई की अध्यक्ष अनीता मनवानी ने कही है। द इंडस एंटरप्रेन्योर्स (टीआईई) सिलिकॉन वैली अमेरिका में एक गैर-लाभकारी संगठन है जो विभिन्न उद्योगों में उद्यमियों के लिए काम करता है। मनवानी ने एक साक्षात्कार में कहा कि मैं बहुत उत्साहित हूं और मुझे लगता है कि सिलिकॉन वैली भी बहुत उत्साहित है क्योंकि हमारे पास भारत के नेतृत्व में गिफ्ट सिटी जैसी पहल के साथ व्यवसाय खोलने के लिए उद्यमिता के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता है। ऐसी पहल जो निवेश करने का मौका देती है और जिससे धन वापस अमेरिका आ रहा है। यह पहले की तुलना में थोड़ा आसान है। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा कि ये सभी पहल हैं जो वास्तव में भारत के साथ गलियारे में बढ़ती गतिविधि को तेज करेंगी। यह भारत का दशक है, हम सभी नेतृत्व का समर्थन करते हैं। मनवानी कैरोबार बिजनेस सॉल्यूशंस आईएलआईएमएस की संस्थापक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) भी हैं।

दालों की कीमतों पर लगाम लगाने सरकार ने उठाया कदम

नई दिल्ली। पिछले कुछ सप्ताह से दालों की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर केंद्र सरकार ने हस्तक्षेप किया है। केंद्र की ओर से सभी राज्यों को निर्देश दिया गया है कि वे कारोबारियों के द्वारा विभिन्न दालों के भंडार का साप्ताहिक आधार पर खुलासा सुनिश्चित करें। साथ ही राज्यों को व्यापारी द्वारा किए गए खुलासे को सत्यापित करने के लिए भी कहा गया है। एक आधिकारिक बयान में बताया गया कि केंद्र सरकार ने जिन दालों के स्टॉक को लेकर खुलासे का प्रावधान किया है, उनमें अरहर दाल, उड़द दाल, चना दाल, मसूर दाल और मूंग दाल शामिल है। इनके अलावा आयातित पीली मटर दाल के स्टॉक की भी निगरानी करने के लिए कहा गया है। पीली मटर दाल के आयात की मंजूरी पिछले साल के अंत में दी गई थी। यह मंजूरी 8 दिसंबर से 30 जून तक के लिए है। बयान के अनुसार कंज्युमर अफेयर्स डिपार्टमेंट की सेक्रेटरी निधि खरे ने दालों की कीमतों पर लगाम लगाने की कवायद के तहत राज्यों के प्रधान सचिवों व उपभोक्ता मामले के विभाग के सचिवों के साथ मुलाकात की। उन्होंने सभी राज्य सचिवों को स्टॉकहोल्डिंग एंटिटीज के द्वारा स्टॉक डिस्क्लोजर सुनिश्चित करने के लिए कहा। उन्होंने दाल के आयातकों समेत इंडस्ट्री के प्रतिनिधियों के साथ भी मुलाकात की।

ईद-उल-फितर के मौके पर शेयर बाजार बंद

मुंबई। देशभर में गुरुवार को ईद-उल-फित्र के मौके पर घरेलू शेयर बाजार बंद है। अब शेयर बाजार शुक्रवार 12 अप्रैल को खुलेंगे। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में 11 अप्रैल को ईद के कारण कामकाज नहीं होगा। ईद की छुट्टी के चलते गुरुवार को इक्विटी, इक्विटी डेरिवेटिव और सिक्योरिटीज लेंडिंग एंड बॉरोइंग सेगमेंट में कारोबार बंद रहेगा। गुरुवार को ईद की छुट्टी पर बंद रहने के बाद बीएसई, एनएसई, कमोडिटी एक्सचेंज एमसीएक्स और एनसीडीईएक्स और बॉन्ड बाजार में शुक्रवार 12 अप्रैल की सुबह सामान्य रूप से ट्रेडिंग शुरू हो जाएगी। ईद की छुट्टी के अलावा अगले हफ्ते बाजार एक दिन के लिए फिर से बंद रहेगा। 17 अप्रैल बुधवार को रामनवमी पर बाजार में कारोबार नहीं होगा। आईटीसी, कोटक बैंक, एसबीआई, टेक महिंद्रा और भारती एयरटेल के शेयरों में तेजी के दम पर हफ्ते के तीसरे कारोबारी दिन बुधवार को देसी शेयर बाजार 75 हजार के स्तर को पार कर हरे निशान पर बंद हुए। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 354.45 अंक की बढ़त के साथ 75,038.15 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में कल 74,807.55 और 75,105.14 के रेंज में कारोबार हुआ। वहीं दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी में भी 111.05 अंक की बढ़त दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 22,753.80 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में बुधवार को 22,673.70 और 22,775.70 के रेंज में कारोबार हुआ।

एडीबी ने देश की जीडीपी वृद्धि का अनुमान बढ़ाकर 7 प्रतिशत किया

नई दिल्ली। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने गुरुवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि का अनुमान 6.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7 प्रतिशत कर दिया है। एडीबी ने कहा है कि मजबूत वृद्धि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की निवेश और उपभोक्ता मांग में क्रमिक सुधार से प्रेरित होगी। हालांकि, 2024-25 का विकास अनुमान 2022-23 वित्तीय वर्ष के अनुमानित 7.6 प्रतिशत से कम है। एडीबी ने कहा कि मजबूत निवेश ने वित्त वर्ष 2022-23 में जीडीपी वृद्धि को गति दी क्योंकि खपत कम थी। एडीबी ने पिछले साल दिसंबर में वित्त वर्ष 2024-25 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 6.7 प्रतिशत विस्तार का अनुमान लगाया था। एशियाई विकास आउटलुक के अप्रैल संस्करण में एडीबी ने कहा कि विनिर्माण और सेवाओं में मजबूत गति के साथ वित्त वर्ष 2023 में अर्थव्यवस्था में जोरदार वृद्धि हुई है। यह तेजी से बढ़ती रहेगी। विकास मुख्य रूप से मजबूत निवेश मांग और उपभोग मांग में सुधार से प्रेरित होगा। वहीं मुद्रास्फीति में गिरावट का रुझान जारी रहेगा। इसमें कहा गया है कि वित्त वर्ष 2024 और वित्त वर्ष 2025 में नरमी के बावजूद सहायक करने की उम्मीद है, विकास मजबूत रहेगा। वित्त वर्ष 2025-26 के लिए एडीबी ने भारत की विकास दर 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। एडीबी ने कहा कि इस वित्तीय वर्ष में निर्यात अपेक्षाकृत कम रहने की संभावना है क्योंकि प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि धीमी हो गई है लेकिन वित्त वर्ष 2025 में इसमें सुधार होगा। एडीबी के अनुसार मुद्रास्फीति कम होने पर मौद्रिक नीति के विकास में सहायक होने की उम्मीद है, जबकि राजकोषीय नीति का लक्ष्य समेकन है, लेकिन पूंजी निवेश के लिए समर्थन बरकरार है।

सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि की बिना शर्त माफी याचिका खारिज की

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा- रामदेव का हलफनामा सिर्फ कागजी

नई दिल्ली। भ्रामक चिकित्सा विज्ञापनों के प्रकाशन पर अवमानना मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने पतंजलि आयुर्वेद और उसके प्रबंध निदेशक आचार्य बालकृष्ण द्वारा बिना शर्त माफी मांगने के लिए दायर किए गए हलफनामों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति हिमा कोहली और अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने पिछले साल नवंबर में अदालत में दिए गए एक वचन का उल्लंघन करते हुए भ्रामक विज्ञापन प्रसारित करने पर माफी मांगने के लिए दायर हलफनामे को खारिज कर दिया। न्यायालय ने पतंजलि की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी से कहा कि हलफनामा महज कागज पर है। अदालत ने चेतावनी दी कि उन्हें दंडात्मक कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अदालत ने कहा कि बालकृष्ण और रामदेव की माफी सिर्फ कागजी है। न्यायमूर्ति कोहली ने रोहतगी से कहा कि हम इसे स्वीकार करने से इनकार करते हैं। हमारा मानना है कि यह जानबूझकर वचन का उल्लंघन किया गया है। हलफनामे के खारिज होने के अलावा आगे के लिए भी तैयार रहें। जब रोहतगी ने कहा, लोग गलतियां करते हैं तो न्यायमूर्ति कोहली ने कहा, तब उन्हें अंजाम भुगतना पड़ता है। हम इस मामले में उतना उदार नहीं होना चाहते हैं। सुनवाई के अंत में रोहतगी ने कहा कि पतंजलि आयुर्वेद सार्वजनिक माफी मांगने के लिए तैयार है। मगर अदालत ने उस पर विचार नहीं किया। न्यायालय ने पतंजलि और उसकी सहायक कंपनी दिव्य फार्मेसी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने में लाइसेंसिंग अधिकारियों की विफलता के लिए उत्तराखंड सरकार को भी फटकार लगाई। पीठ ने पूछा कि उसे ऐसा क्यों नहीं सोचना चाहिए कि अधिकारी पतंजलि और दिव्य फार्मेसी के साथ मिले हुए थे।

अदालत ने कहा कि पतंजलि के एमडी और बाबा रामदेव ने विदेश यात्रा के झूठे दावे करते हुए अदालत के समक्ष व्यक्तिगत तौर पर उपस्थिति से बचने की कोशिश की है।

कच्चा तेल 91 डॉलर, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली। वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव जारी है। ब्रेंट क्रूड की कीमत 91 डॉलर और डब्ल्यूटीआई क्रूड 87 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में गुरुवार को कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है। वैश्विक बाजार में हफ्ते के चौथे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.31 डॉलर की उछाल के साथ 90.79 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। वहीं वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.27 डॉलर की बढ़त के साथ 86.48 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

निर्देश के बाद भी अब तक सिर्फ 15 बिल्डरों ने ही रकम जमा कराई

- अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों के बाद 57 बिल्डरों को 25 प्रतिशत रकम जमा करने दिए थे निर्देश

नोएडा। अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों के बाद प्राधिकरण क्षेत्र के 57 बकायदार बिल्डरों को 25 प्रतिशत रकम जमा करने और फ्लैटों की रजिस्ट्री के निर्देश दिए गए थे, लेकिन अब तक सिर्फ 15 बिल्डरों ने ही रकम जमा कराई है, जबकि 42 बिल्डरों ने पैसा जमा करने की सहमति दी थी। ऐसे में 1400 रजिस्ट्री में से केवल 325 ही हुई है। प्राधिकरण के साथ क्रेडाई की हाल ही में हुई बैठक में कुछ बिल्डरों द्वारा 25 प्रतिशत राशि जमा करने की सूचना दी गई। नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम ने सभी बिल्डरों के लिए 27 बिल्डरों को 12 अप्रैल तक का समय दिया है। ये बिल्डर एक महीने का अतिरिक्त समय मांग रहे हैं।

लेकिन प्राधिकरण ने मना कर दिया है। गौरतलब है कि अमिताभ कांत समिति की सिफारिशें आने के बाद गौतमबुद्ध नगर में 10 हजार से अधिक फ्लैटों की रजिस्ट्री का रास्ता साफ होता दिखाई दिया था। इस मामले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अधिकारियों की एक कमेटी बनाकर जल्द से जल्द रजिस्ट्री के मुद्दे को हल करने के निर्देश दिए थे।

समिति की रिपोर्ट आने के बाद ही ग्रेटर नोएडा के भी 9 बिल्डरों ने लगभग 35 करोड़ रुपए प्राधिकरण के खाते में जमा कर दिए। इससे 10283 फ्लैटों की रजिस्ट्री का रास्ता साफ होता दिखाई दिया। अमिताभ कांत समिति के प्रस्तावों को कैबिनेट की मंजूरी मिलने के बाद शासनादेश की शर्तों का पालन कर सहमति देने के लिए नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी बकायादार बिल्डरों के साथ लगातार बैठकें कर रहे हैं। शासनादेश में मुख्य रूप से एक अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2022 तक के काल को कोविड काल मानते हुए जीरो पीरियड का लाभ दिया जाना है।

एनसीएलएटी ने पार्श्वनाथ लैंडमार्क के खिलाफ दिवालिया याचिका खारिज की

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कंपनी विधि अपील अधिकरण (एनसीएलएटी) ने पार्श्वनाथ लैंडमार्क डेवलपर्स की अनुषंगी कंपनी के खिलाफ दिवालिया कार्यवाही शुरू करने के लिए पार्श्वनाथ लैंडमार्क डेवलपर्स के चार इकाई खरीदारों द्वारा दायर याचिका को खारिज कर दिया है। अपीलीय न्यायाधिकरण ने राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) की प्रधान पीठ के आदेशों को बरकरार रखा, जिसने 17 अक्टूबर 2023 को तकनीकी आधार पर उनकी याचिका खारिज कर दी थी क्योंकि याचिकाकर्ताओं की संख्या केवल चार थी, जबकि पार्श्वनाथ लैंडमार्क द्वारा आवंटितों की कुल संख्या 488 है। मामला रियल एस्टेट कंपनी के दिल्ली स्थित प्रोजेक्ट ला ट्रॉपिकाना खैबर पास से जुड़ा है।

इसके अलावा अपीलीय न्यायाधिकरण ने फ्लैट खरीदारों की इस दलील को भी खारिज कर दिया कि वे एक अलग वर्ग के हैं और दिल्ली रेरा के एक आदेश में डेवलपर को 22 अक्टूबर 2022 को ब्याज के साथ राशि वापस करने का निर्देश दिया गया था। डेवलपर पर आदेश के 45 दिन के भीतर राशि वापस करने का दायित्व था, लेकिन किसी राशि का भुगतान नहीं किया गया। इस प्रकार उसने प्रत्येक याचिकाकर्ता को 10 प्रतिशत ब्याज के साथ 24.14 करोड़ रुपये वापस नहीं करके चूक की थी।

उनके अनुसार वे रियल एस्टेट आवंटियों की श्रेणी में वित्तीय ऋणदाता नहीं हैं, लेकिन डिक्री धारकों की श्रेणी में वित्तीय ऋणदाता हैं।

अदालत ने एसोसिएटेड जर्नल्स की संपत्ति जब्ती को वैध ठहराया

- मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में 751.9 करोड़ की संपत्ति जब्त की थी

नई दिल्ली। पिछले वर्ष धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) की संपत्ति की जब्ती को अदालत ने वैध करार दिया है। नवंबर 2023 में ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में कांग्रेस से जुड़ी संस्थाओं एजेएल और यंग इंडियन की 751.9 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त कर ली। इसने इस सिलसिले में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित कई व्यक्तियों से पूछताछ की थी।1 नवंबर 2012 को वरिष्ठ भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने अदालत में एक निजी शिकायत दर्ज की थी, जिसमें आरोप लगाया गया था कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी, दोनों ने एजेएल नामक सार्वजनिक रूप से सीमित कंपनी का अधिग्रहण करके अपनी स्वामित्व वाली निजी कंपनी, यंग इंडियन के जरिए 16 अरब रुपये की धोखाधड़ी कर जमीन हड़प ली थी। अदालत ने 19 दिसंबर, 2015 को मामले में गांधी परिवार और अन्य को जमानत दे दी थी। जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में स्थापित नेशनल हेराल्ड समाचारपत्र के प्रकाशक एजेएल ने 90 करोड़ रुपये के बड़े अवैतनिक ऋण के साथ 2008 में परिचालन बंद कर दिया। यंग इंडियन को 23 नवंबर, 2010 को 5 लाख रुपये की मामूली भुगतान पूंजी के साथ शामिल किया गया था, जिसमें सोनिया गांधी और राहुल गांधी के पास सामूहिक रूप से 76 प्रतिशत शेयर थे।दिसंबर 2010 में यंग इंडियन ने एजेएल के बकाया ऋण का स्वामित्व लेने का संकल्प लिया, जिसने कांग्रेस से ब्याज मुक्त ऋण प्राप्त किया था। इस फैसले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी समेत पार्टी नेताओं की अहम भूमिका थी। एजेएल के बोर्ड ने 50 लाख रुपये के बदले में पूरी शेयर इक्विटी यंग इंडियन को हस्तांतरित कर दी। इसमें कांग्रेस नेतृत्व के लोग भी शामिल थे।

भारत के दौरे पर आएंगे मस्क, पीएम मोदी से करेंगे मुलाकात

नई दिल्ली। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क इस महीने भारत के दौरे पर आएंगे। इस बात की पुष्टि मस्क ने अपने सोशल मीडिया पर की। टेस्ला सीईओ ने एक्स में जानकारी दी कि वह भारत में पीएम मोदी से मिलने के लिए उत्साहित हैं। इसके अलावा मस्क भारत में अपना नया प्लांट लगाने के लिए निवेश की योजनाओं की घोषणा भी कर सकते हैं। सूत्रों के मुताबिक मस्क 22 अप्रैल से शुरू हो रहे सप्ताह में नई दिल्ली में प्रधानमंत्री से मुलाकात करेंगे और भारत में टेस्ला का प्लांट लगाने की योजनाओं के बारे में अलग से घोषणा करेंगे। एक सूत्र ने बताया कि टेस्ला के सीईओ की यात्रा में उनके साथ अन्य अधिकारी भी शामिल होंगे। बताया जा रहा है कि मस्क भारत 22 अप्रैल से लेकर 27 अप्रैल तक भारत में यात्रा करेंगे। खबरों के मुताबिक टेस्ला भारत में अपना मैन्युफैक्चरिंग प्लांट लगाने के लिए किसी स्थानीय भागीदार की तलाश कर रहा है। रिपोर्ट की मानें तो अमेरिकी इलेक्ट्रिक वाहन प्रमुख भारत में अपनी मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी स्थापित करने के लिए रिलायंस इंडस्ट्रीज के साथ एक ज्वाइंट वेंचर को लेकर बातचीत कर सकता है। यानी कि भारत में टेस्ला की एंट्री में रिलायंस की भी भूमिका हो सकती है। मस्क और मोदी के बीच मुलाकात जून 2023 में न्यूयार्क में हुई थी। तब टेस्ला ने इलेक्ट्रिक वाहनों पर आयात शुल्क घटाए जाने पर जोर दिया था। भारत ने पिछले महीने कुछ मॉडलों पर आयात शुल्क 100 प्रतिशत से घटाकर 15 प्रतिशत किए जाने के लिए एक नई ईवी नीति की पेशकश की।

आईपीएल 2024 में आज आमने-सामने होंगी दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम शुक्रवार को यहां आईपीएल 2024 सत्र में अपने घरेलू मैदान पर दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ जीत की लय बरकरार रखने उतरेगी। लखनऊ सुपर जायंट्स ने अब तक चार में से तीन मैच जीते हैं और इस प्रकार वह 6 अंक लेकर तालिका में तीसरे नंबर पर है जबकि दिल्ली की टीम अब तक केवल एक जीत के साथ 2 अंक लेकर अंतिम स्थान पर है। ऐसे में इस मैच में भी लखनऊ को जीत का प्रबल दावेदार माना जा रहा है क्योंकि अब तक उसके बल्लेबाजों और गेंदबाजों का प्रदर्शन अच्छा रहा है। इसके साथ ही टीम को प्रदर्शन खेल के सभी विभागों में अच्छा रहा है। ऐसे में दिल्ली कैपिटल्स को इस मैच में जीत के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। उसके बल्लेबाजों के साथ ही गेंदबाजों को भी अपनी भूमिका ठीक से निभानी होगी।

दिल्ली कैपिटल्स के गेंदबाजों को इस मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स के बल्लेबाजों पर अंकुश लगाना होगा अगर वह ऐसा नहीं कर पाते तो सुपर जायंट्स बना स्कोर बनाकर मैच पर हावी हो जाएगी।

सुपर जायंट्स को इस मैच में 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले उसके तेज गेंदबाज मयंक यादव की कमी खलेगी। मयंक ने पिछले मुकाबलों में टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। मयंक पेट की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण टीम से बाहर हो गये हैं। मयंक के नहीं होने से लखनऊ की टीम को युवा तेज गेंदबाज यश ठाकुर से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी। यश न पिछले मैच में पांच विकेट लिए थे। इसके अलावा टीम के पास नवीन उल हक, क्रृणाल पंड्या और लेग स्पिनर रवि बिश्नोई जैसे गेंदबाज हैं।

वहीं बल्लेबाजी में लखनऊ के पास क्विंटन डिकॉक और कप्तान केएल राहुल जैसे शानदार सलामी बल्लेबाज हैं। डिकॉक ने अभी तक दो अर्धशतक लगाये हैं हालांकि राहुल अब तक बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं। बल्लेबाज निकोलस पूरन भी अच्छ फॉर्म में हैं जिसका लाभ टीम को मिलेगा। टीम की परेशानी युवा बल्लेबाज देवदत्त पडीक्कल का खरा फॉर्म रहा है। पडीक्कल अब तक दो अंकों में भी नहीं पहुंच पाये हैं।

दूसरी ओर कप्तान ऋषभ पंत की दिल्ली कैपिल्स को अब तक केवल एक मैच में जीत मिली है। उसने सीएसके को हराया था पर उसके बाद से ही टीम हार रही है। पिछले मैच में उसे मुम्बई इंडियंस से हार का सामना करना पड़ा था। कैपिटल्स की सबसे बड़ी चिंता उसकी कमजोर तेज गेंदबाजी है ऐस में अब अब इस मैच में तेज गेंदबाजी की कमान अनुभवी ईशांत शर्मा और खलील अहमद पर रहेगी। मुकेश कुमार भी चोट से वापसी कर सकते हैं पर उनका प्रदर्शन भी अब तक प्रभावी नहीं रहा है। मध्यम गति के गेंदबाज सुमित कुमार और रसिक डार के लिए सुपरजायंटस के बल्लेबाजों को रोकना आसान नहीं होगा।

तेज गेंदबाज एनरिच नॉर्किया भी चोट से वापसी के बाद धातक गेंदबाजी नहीं कर सके हैं। वहीं बल्लेबाजी में अब तक कप्तान ऋषभ पंत और ट्रिस्टन स्टब्स के अलावा अन्य बल्लेबाजों ने निराश किया है। बल्लेबाज पृथ्वी शॉ भी अब तक अपने पहले वाले अंदाज में नहीं दिखे हैं। ऐसे में अगर टीम को जीत दर्ज करनी है तो इस मैच में सभी बल्लेबाजों को रन बनाने होंगे। कुल मिलकार देखा जाए तो ये मैच रोमांचक होने की उम्मीद है।

टीम

दिल्ली कैपिटल्स = ऋषभ पंत (कप्तान), डेविड वॉर्नर, पृथ्वी साव, स्वस्तिक चिकारा, यश ढुल, एनरिच नॉर्किया, ईशांत शर्मा, झाय रिचर्डसन, खलील अहमद, कुलदीप यादव, मुकेश कुमार, प्रवीण दुबे, रसिक डार, विकी ओस्तवाल, अक्षर पटेल, जैक फ्रेजर गुर्क, ललित यादव, मिचेल मार्श, सुमित कुमार, अभिषेक पोरेल, कुमार कुशाग्र, रिकी भुई, शाइ होप, ट्रिस्टन स्टब्स।

लखनऊ सुपर जाइंट्स-केएल राहुल (कप्तान), क्विंटन डिकॉक, निकोलस पूरन, आयुष बदोनी, काइल मेयर्स, मार्कस स्टोइनिस, दीपक हुडा, देवदत्त पडिक्कल, रवि बिश्नोई, नवीन उल हक, क्रुणाल पंड्या, युद्धवीर सिंह, प्रेरक मांकड़, यश ठाकुर, अमित मिश्रा, शमर जोसेफ, मयंक यादव, मोहसिन खान, के गौतम, शिवम मावी, अर्शिन कुलकर्णी, एम सिद्धार्थ, एश्टन टर्नर, मैट हेनरी, मोहम्मद अरशद खान।

राजस्थान के खिलाफ मैच में अंपायर पर भड़के शुभमन

नई दिल्ली (एजेंसी)। जयपुर (ईएमएस)। गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ हुए मुकाबले में शानदार बल्लेबाजी करते हुए अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। शुभमन इसके बाद भी इस मैच में अंपायर से बहस के कारण विवादों में आ गये जबकि इससे पहले उन्हें हमेशा ही शांत तरीके से खेलते हुए देखा गया है। शुभमन में कप्तान बनने के बाद बदलाव आया है जो सही भी है। इस मैच में एक गेंद को वाइड करार दिये जाने पर शुभमन ने आपत्ति जतायी थी। इसी को लेकर वह अंपायर पर भड़क गये। शुभमन ने इस मैच में 44 गेंदों पर 72 रन बनाए।

राजस्थान रॉयल्स की पारी के 17वें ओवर की आखिरी गेंद पर उस समय विवाद हुआ जब तेज गेंदबाज मोहित शर्मा की गेंद को मैदानी अंपायर ने वाइड करार दिया। इसके बाद गुजरात टाइटंस की ओर से शुभमन ने इसपर डीआरएस लिया। थर्ड अंपायर ने पहले इसे सही करार दिया था पर तीसरे अंपायर ने इस गेंद को वाइड करार दिया। इसके बाद नाराज शुभमन मैदानी अंपायर के पास जाकर बहस करने लगे। गिल काफी देर तक इस मामले में बहस करते नजर आये।

थर्ड अंपायर के फैसले पर शुभमन गिल का नाराज होना जायज था क्योंकि पहले उसने गेंद को सही करार दिया और बाद में मैदानी अंपायर के फैसले के साथ गए। इसके बाद राजस्थान के संजू सैमसन ने चौका लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया. इस तरह वाइड गेंद और उसके बाद चौका सहित कुल 5 रन का नुकसान गुजरात टाइटंस को हुआ।

एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप 2027 की मेजबानी संयुक्त रूप से दक्षिण अफ्रीका, जिंबाब्वे और नामीबिया करेंगे : आईसीसी

जोहानिसबर्ग (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने क्रिकेट विश्व कप 2027 के लिए स्थल घोषित कर दिया है। विश्व कप 2027 की मेजबानी अक्टूबर-नवंबर में संयुक्त रूप से दक्षिण अफ्रीका, जिंबाब्वे और नामीबिया करेंगे।आईसीसी ने 8 शीर्ष क्रिकेट स्टेडियमों को 2027 आईसीसी एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप के आयोजन स्थल के रूप में रखा है। इसमें जोहनिसबर्ग का वांडरर्स, डरबन का किंग्समीड और केप टाउन का न्यूलैंड्स है। वहीं क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी फोलेत्सी मोसेकी ने कहा कि आयोजन स्थल होटल के कमरों और हवाई अड्डे की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए ही तय किए गए हैं। मोसेकी ने साथ ही कहा कि स्थलों के चयन का तरीका इस प्रकार से था कि इसमें होटल के कमरों की संख्या और हवाईअड्डे की उपलब्धता पर भी ध्यान दिया गया। मोसेकी ने आगे कहा कि बेनोनी, जेबी मार्क्स ओवल और डायमंड ओवल जैसे तीन स्थलों को छोड़ना उनके लिए कठिन रहा। उन्होंने साथ ही कहा कि हमारे पास आईसीसी से मान्यता प्राप्त 11 स्थल हैं इसलिए 3 को छोड़ना कठिन था पर इस दौरान बहुत सारी चीजों को ध्यान में रखा गया। आयोजन स्थल के अलावा इसके आसपास प्रशिक्षण स्थलों की मौजूदगी ने भी अहम भूमिका निभाई। दक्षिण अफ्रीका में टूर्नामेंट के मुख्य स्थल वांडरर्स, प्रिटोरिया का सेंचुरियन पार्क, किंग्समीड, गकेबरहा का सेंट जॉर्ज पार्क, पार्ल का बोलैंड पार्क और न्यूलैंड्स होंगे जबकि ब्लोमफोंटेन का मैनगौंग ओवल और ईस्ट लंदन का बफेलो पार्क भी कुछ मैचों की मेजबानी करेंगे। वहीं अन्य मुकाबले टूर्नामेंट के सह मेजबान जिंबाब्वे और नामीबिया में खेल जाएंगे। मेजबान दक्षिण अफ्रीका और जिंबाब्वे ने टूर्नामेंट के लिए सीधे क्वालीफाई कर लिया है पर नामीबिया को अफ्रीकी क्वालीफायर से गुजरना होगा।

आईपीएल के अगले सत्र में शायद ही नजर आयें धोनी सहित ये दिग्गज

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में खेल रहे कई खिलाड़ी उम्रदराज होते जा रहे हैं और ऐसे में उनके अगले सत्र में खेलने की संभावनाएं नहीं हैं। इनमें चेन्?नई सुपरकिंग?स के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी से लेकर स्पिनर अमित मिश्रा , विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक और विकेटकीपर बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा जैसे खिलाड़ी हैं। धोनी अभी 42 साल के हैं और जिस प्रकार उन्होंने इस सत्र में कप्तानी छोड़ी है। उससे माना जा रहा है कि वह अगले सत्र में नहीं खेलेंगे। वहीं धोनी के अलावा अमित मिश्रा और दिनेश कार्तिक भी 37 साल से अधिक उम्र के हो गये हैं। ऋद्धिमान साहा 39 साल के हैं। धोनी के अलावा दिनेश कार्तिक ने भी अगले सत्र में नहीं खेलने के संकेत दिये हैं।

महेन्द्र सिंह धोनी

महेन्द्र सिंह धोनी आईपीएल की शुरुआत से ही खेल रहे हैं। वह चेन्नई सुपरकिंग्स के ही साथ रहे हैं पर स्पॉट फिक्सिंग मामले में सीएकके के दो साल के लिए प्रतिबंधित होने के बाद वे 2016 और 2017 में रॉयल पुणे सुपरजायंट्स से खेले थे। आईपीएल में अब तक धोनी ने 255 मैचों में 39.09 के औसत से 5121 रन बनाए हैं जिसमें नाबाद 84 रन सर्वोच्च स?कोर है। विकेटकीपर के तौर पर वे 184 शिकार कर चुके हैं जिसमें 142 कैच और 42 स्टंपिंग हैं। हैं.

अमित मिश्रा

स्पिनर अमित मिश्रा आईपीएल में तीन हैट्रिक लेने वाले एकमात्र गेंदबाज हैं। लखनऊ सुपरजायंट्स टीम के स्पिनर अमित को इस सत्र में अब तक कोई मैच खेलने का अवसर नहीं मिला है। पहले सत्र यानी वर्ष 2008 से ही आईपीएल खेल रहे इस स्पिनर ने अब तक दिल्ली कैपिटल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपरजायंट्स का प्रतिनिधित्व किया है और 161 मैचों में 23.84 के औसत से 173 विकेट लिए हैं

ऋद्धिमान साहा

गुजरात टाइटंस के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा का क्रिकेट करियर भी अंतिम दौर में है। 39 वर्ष से अधिक उम्र के साहा के लिए मौजूदा सीजन बैटर के तौर पर खास नहीं रहा है। चार मैचों में 19.00 के औसत से केवल 76 रन ही उन्होंने बनाये हैं। देश के बेहतरीन विकेटकीपरों में शामिल रहे साहा पूर्व में पंजाब किंग्स, कोलकाता नाइटराइडर्स और सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से भी खेल चुके हैं। 2008 से आईपीएल टीम का हिस्सा रहे बंगाल के इस विकेटकीपर बैटर ने अब तक 165 मैचों में 2874 रन बनाए हैं

दिनेश कार्तिक

विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक के नाम पर आईपीएल में कुछ बेहतरीन पारियां हैं। फिनिशर के के तौर पर उन्होंने बेहद अहम पारियां खेली हैं। इस सत्र में आरसीबी टीम के सदस्य कार्तिक ने 5 मैचों की चार पारियों में दो बार नाबाद रहते हुए 45 के औसत और 173.07 के स्ट्राइक रेट से 90 रन बनाए हैं। आईपीएल के 247 मैचों में 26 के औसत और 133.31 के स्ट्राइक रेट से उनके नाम 4606 रन हैं जिसमें 20 अर्धशतक हैं

टी20 विश्वकप के लिए यशस्वी को शायद ही जगह मिले

जयपुर। सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायस्वाल को जून में होने वाले टी20 विश्वकप के लिए शायद ही भारतीय टीम में जगह मिले। इसका कारण टी20 में उनका अब तक का कमजोर प्रदर्शन रहा है। यशस्वी के पास इस आईपीएल में अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने का अवसर था पर अब तक वह इसमें सफल होते नहीं दिखते हैं। राजस्थान रॉयल्स की ओर से खेल रहे यशस्वी अब तक आईपीएल में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मुकाबले में भी यशस्वी बड़ी पारी नहीं खेल पाये। उन्होंने अब तक के अपने पहले पांच मुकाबलों में केवल 63 रन ही बनाए हैं। जिसमें 24 रन उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा है। ऐस में अगर उन्हें विश्वकप में जगह बनानी है तो बड़ी पारी खेलनी होगी। बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने पहले ही ऐलान कर दिया था कि रोहित शर्मा ही विश्वकप में टीम इंडिया के कप्तान होंगे। ऐसे में उनकी सलामी जोड़ीदार के तौर पर शुभमन गिल को शामिल किया जा सकता है। शुभमन ने आईपीएल में भी अच्छा प्रदर्शन किया है, इसलिए वह रोहित के जोड़ीदार के लिए प्रबल दावेदार बनकर उभरे हैं। बाएं हाथ के युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने अब तक केवल 63 रन रन बनाये हैं। पिछले सत्र में अनकैप्ड प्लेयर के तौर पर 600 से ज्यादा रन बनाकर इतिहास रचने वाले यशस्वी के कमजोर प्रदर्शन से सभी को हैरानी होगी।

टी20 विश्वकप में बुमराह के जोड़ीदार बन सकते हैं अर्शदीप

मुम्बई। आईपीएल में पंजाब किंग्स के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने अब तक जिस प्रकार अच्छी गेंदबाजी की है। उससे जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में संयुक्त रुप से होने वाले टी20 विश्वकप के लिए उनकी दावेदारी मजबूत हुई है। अब तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के जोड़ीदार के तौर पर अर्शदीप को जगह मिल सकती है। अर्शदीप ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ शानदार गेंदबाजी करते हुए केवल 29 रन देकर 4 विकेट लिए थे। अर्शदीप ने इस मैच में हैदराबाद केट्रेविस हेड और एडेन मार्करम को सबसे पहले पेवेलियन भेजा। अर्शदीप के कारण ही हैदराबाद ने एक समय 27 रन पर 2 विकेट खो दिये थे। 25 साल के अर्शदीप ने इसके बाद दूसरे स्पेल में भी शानदार गेंदबाजी की। अर्शदीप ने पारी के 17वें ओवर में पहले अब्दुल समद और फिर नीतीश कुमार रेड्डी को पेवेलियन भेजा। अर्शदीप अब आईपीएल 2024 में 8 विकेट लेकर सबसे अधिक विकेट लेने के मामले में दूसरे नंबर पर पहुंच गए हैं। वहीं बांग्लादेश के मुस्तफिजुर 9 विकेट लेकर ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे हैं। अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी के टी20 विश्वकप से बाहर होने के कारण भी नई गेंद से बुमराह के जोड़ीदार की जो जगह खाली हो रही है। उसे अर्शदीप भर सकते हैं। वैसे भी बाएं हाथ के गेंदबाज की भारतीय टीम में कमी है।

ऑरेंज कैप की रेस में दूसरे नंबर पर पहुंचे रियान पराग

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के यू खिलाड़ी रियान पराग ने इस सत्र में शानदार प्रदर्शन कर अपनी क्षमताओं को दिखाया है। गुजरात टाइटंस के खिलाफ अपने घरेलू मैदान पर पराग ने इस सत्र में अपना तीसरा अर्धशतक लगाया है। इससे वह ऑरेंज कैप की रेस में दूसरे नंबर पर हैं। अब तक इस सत्र में सबसे अधिक रन बनाकर केवल विराट कोहली ही नंबर एक पर चल रहे हैं। पराग ने गुजरात के खिलाफ 48 बॉल पर 76 की बेहतरीन पारी खेली।

गुजरात टाइटंस के खिलाफ मुकाबले में भी पराग ने शानदार पारी खेली थी हालांकि उनकी टीम को हार का सामना करना पड़ा। पराग ने इस सत्र में अबतक तीन अर्धशतक लगाये हैं। इससे पहले के सत्र में पराग अपने कमजोर प्रदर्शन के कारण सोशल मीडिया पर ट्रोलर्स के निशाने पर रहते थे। इस दौरान टीम प्रबंधन ने उनका पूरा साथ दिया जिसका लाभ अब नजर आ रहा है।

आईपीएल 2024 में टीम प्रबंधन ने पराग को नंबर 4 पर भेजा जिससे भी उन्हें लाभ हुआ। घरेलू सर्किट में शानदार प्रदर्शन को देखते हुए उनके बल्लेबाजी क्रम का ऊपर किया गया। लंबे समय तक खराब फॉर्म के कारण निशाने पर रहे पराग ने पहले घरेलू सर्किट में शानदार प्रदर्शन किया और अब उसे आईपीएल में भी बरकरार रखा है।

आईपीएल में सबये ज्यादा चौके , छक्के लगाने के मामले में वेस्टइंडीज के क्रिकेटरों का रहा है दबदबा

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में दुनिया भर के क्रिकेट खेलते हैं। इस लीग के इतिहास पर नजर डालें तो इसमें खेलने वाले विदेशी खिलाड़ियों में सबसे ज्यादा आक्रामक वेस्टइंडीज के क्रिकेटर साबित हुए हैं। विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल, कीरोन पोलार्ड और आंद्र रसेल ने इन टूर्नामेंट में जमकर चौके , छक्के लगाये हैं। आईपीएल इतिहास में चौकों से ज्यादा छक्के लगाने के मामले में सबसे उपर मुंबई इंडियंस के पूर्व ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड का नाम टॉप पर है। उनके खाते में 218 चौके हैं जबकि छक्कों की संख्या 223 है। वहीं दूसरे नंबर पर भी वेस्टइंडीज के ही आंद्र रसेल हैं। रसेल ने कोलकाता नाइटराइडर्स की ओर से खेलते हुए 157 चौके मारे हैं जबकि उनके छक्कों की संख्या 203 रही है।

आईपीएल में चौके से ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची तीसरे नंबर पर भी वेस्टइंडीज के ही निकोलस पूरन हैं। पूरन ने लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए खेलते हुए इस टूर्नामेंट में 85 चौके मारे हैं जबकि छक्के कुल 103 लगा चुके हैं। आईपीएल में चौके से ज्यादा छक्के मारने वाले बल्लेबाजों की सूची में पांचवें नंबर पर भी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज राजस्थान रॉयल्स की ओर से खेलने वाले शिमरोन हेटमायर ने 68 चौके मारे हैं जबकि छक्के 76 लगा चुके हैं। टूर्नामेंट में चौके से ज्यादा छक्के मारने वाले बल्लेबाजों की सूची में एक मात्र भारतीय के रूप में ऑलराउंडर शिवम दुबे हैं। शिवम ने अबतक 67 चौके और 83 छक्के मारे हैं। च

हार्दिक पांड्या का भाई गिरफ्तार, करोड़ों रुपए की धोखाधड़ी का आरोप

मुंबई। मुंबई पुलिस ने क्रिकेटर हार्दिक और क्रुणाल पंड्या के सौतेले भाई वैभव पांड्या को गिरफ्तार किया है जिसने कथित तौर पर एक व्यापारिक साझेदारी में लगभग 4.3 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की थी। एक रिपोर्ट के अनुसार 37 वर्षीय वैभव पर एक पार्टनरशिप फर्म से लगभग 4.3 करोड़ रुपए के हेर-फेर का आरोप है, जिससे हार्दिक और क्रुणाल पांड्या को काफी वित्तीय नुकसान हुआ। जानकारी के मुताबिक हार्दिक, क्रुणाल और वैभव पांड्या ने मिलकर तीन साल पहले पॉलिमर बिजनेस शुरू किया था। जिसमें तीनों भाइयों ने बिजनेस को खड़ा करने में लगने वाली पूंजी का 40त्न और वैभव को 20/ निवेश करना था जबकि हर दिन का कामकाम वैभव को देखना था। हिस्सेदारी के अनुसार ही मुनाफा भी तीनों में बंटने वाला था। हालांकि वैभव ने कथित तौर पर अपने सौतेले भाइयों को सूचित किए बिना उसी बिजनेस में एक और फर्म स्थापित की, इस प्रकार साझेदारी समझौते का उल्लंघन किया। इससे साझेदारी में खड़ी की गई कंपनी के लाभ में बड़ी गिरावट आई और 3 करोड़ का अनुमानित नुकसान हुआ। इसके अतिरिक्त यह आरोप लगाया गया है कि वैभव ने चोरी-छिपे अपने खुद के लाभ का हिस्सा 20त्न से बढ़ाकर 33.3त्न कर दिया। गौर हो कि फिलहाल हार्दिक पांड्या आईपीएल 2024 में मुंबई इंडियंस की कप्तानी कर रहे हैं जहां टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। मुंबई ने अभी तक एक मैच जीता है और अंक तालिका में 8वें स्थान पर है।

भारतीय खिलाडी पीवी सिंधू बैडमिंटन एशिया चैम्पियनशिप के प्री क्वार्टरफाइनल में चीन की खिलाड़ी से हारी

निंगबो। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू गुरुवार को यहां बैडमिंटन एशिया चैम्पियनशिप के प्री क्वार्टरफाइनल में छठी वरीयता प्राप्त चीन की हान युए को कड़ी चुनौती देने के बावजूद हार गयीं। पेरिस ओलंपिक से पहले फॉर्म में लौटने की कोशिश में जुटी सिंधू ने एक घंटे और नौ मिनट तक कड़ी चुनौती पेश की लेकिन अंत में युए से 18-21 21-13 17-21 से हार गयी जबकि गुरुवार को मुकाबले से पहले उसके खिलाफ इस भारतीय का जीत का रिकॉर्ड 5-0 था। अन्य भारतीयों में तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की युगल जोड़ी प्री क्वार्टरफाइनल में जापान की नामी मातसुयामा और चिहारू शिडा की तीसरी वरीय जोड़ी से 17-21 12-21 से पराजित हो गयीं। सिंधू ने पहले गेम में अच्छी शुरूआत की और अपने अनुभव का फायदा उठाते हुए 8-4 से बढ़त ले ली और इसे 14-8 तक बढ़ा दिया। पर चीन की खिलाड़ी ने शानदार वापसी की और सिंधू ने गलतियां करनी शुरू कर दी। युए ने सिंधू को लंबी रैलियों में उलझाकर थका दिया और 15-15 से बराबरी पर पहुंच गयीं। युए ने इसके बाद पहला गेम अपने नाम कर लिया। दूसरे गेम में सिंधू ने आक्रामक रूख अख्तियार किया और अपने अनुभव की बदौलत 16-8 से बढ़त बना ली। युए ने वापसी की सर्वश्रेष्ठ कोशिश की लेकिन सिंधू ने कोई मौका नहीं दिया और दूसरा गेम अपने नाम कर 1-1 से बराबरी हासिल कर ली। निर्णायक गेम में सिंधू 8-4 की बढ़त से अच्छी शुरूआत के बाद लय खो बैठीं। चीन की खिलाड़ी ने तेज और आक्रामक खेल से भारतीय खिलाड़ी को लंबी रैलियों में फंसाकर थका दिया जिससे सिंधू गलतियां करने लगीं। इसके बाद 10-10 से युए 17-10 से आगे हो गयीं। सिंधू ने हालांकि कुछ अंक जुटाकर अंतर 20-17 किया। सिंधू ने दो गेम प्वाइंट बचाये लेकिन अंत में उनकी प्रतिद्वंद्वी ने क्वार्टरफाइनल में प्रवेश कर लिया।

ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता एथलीट को पुरस्कार राशि देना अच्छा कदम : नीरज चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने गुरुवार को विश्व एथलेटिक्स के पेरिस ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले सभी खिलाड़ियों को 50,000 डॉलर का पुरस्कार देने के फैसले की प्रशंसा की और साथ ही कहा कि वह चाहेंगे कि अन्य वैश्विक प्रतियोगिताओं में भी इसी तरह का प्रोत्साहन मिले। ओलंपिक खेलों में पहली बार होगा कि इस साल पेरिस खेलों की 48 एथलेटिक्स स्पर्धाओं के स्वर्ण पदक विजेताओं को विश्व एथलेटिक्स द्वारा भारी राशि दी जाएगी।

विश्व एथलेटिक्स ने अपने इस दायरे को बढ़ाने का वादा किया है कि 2028 लास एंजिल्स चरण में सभी तीनों पदक विजेताओं को शामिल किया जाएगा। ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज ने कहा, 'पैसे के मामले में एथलेटिक्स में उस तरह की राशि नहीं है जैसे टेनिस या फुटबॉल और अन्य खेलों में है।' उन्होंने कहा, 'विश्व एथलेटिक्स का पेरिस ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता एथलीटों के लिए पुरस्कार राशि की घोषणा करने का फैसला अच्छी शुरूआत है। यह अच्छा फैसला है।'

विश्व चैम्पियनशिप के स्वर्ण पदक विजेता चोपड़ा ने कहा, 'विश्व एथलेटिक्स बहुत सक्रिय होता जा रहा है। आने वाले समय में मुझे लगता है कि वे डायमंड लीग जैसी प्रतियोगिताओं में भी वित्तीय प्रोत्साहन देंगे, जो अच्छा होगा।' विश्व एथलेटिक्स अध्यक्ष सेबेस्टियन को ने कहा कि ओलंपिक पदक विजेताओं के लिए पुरस्कार राशि देना लंबे समय से लंबित था क्योंकि ओलंपिक खेलों में जो भारी राजस्व मिलता है, उसमें ट्रैक एवं फील्ड एथलीट का मुख्य योगदान होता है। को खुद दोहरे ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता हैं।

उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) से फैसले पर चर्चा नहीं की है जिसके अंतर्गत ओलंपिक खेल आयोजित होते हैं। यह दोनों के बीच तनाव का कारण हो सकता है। को ने बुधवार को वर्चुअल बातचीत में पीटीआई से कहा, 'मुझे नहीं पता, मैंने उनसे (आईओसी) इस बारे में चर्चा नहीं की है।' उन्होंने कहा, 'मैंने हमेशा ही कहा है कि मैं विकास से हुए लाभ से खिलाड़ियों का फायदा चाहता था।'

चोपड़ा इससे सहमत हैं और उन्होंने खिलाड़ियों के लिए वित्तीय सुरक्षा की जरूरत पर बात करते हुए कहा, 'अंत में हम जो कमाई करते हैं, वो खिलाड़ियों के लिए पर्याप्त है। इससे हमें आराम की जिंदगी जीने में मदद मिल रही है, हमारे परिवार को आराम की जिंदगी मिल रही है।% चोपड़ा अपना प्रतिस्पर्धी सत्र 10 मई को दोहा डायमंड लीग में शुरू करेंगे। अभी वह ट्रेनिंग के लिए तुर्की में हैं। वह स्विस पर्यटन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के लिए इस साल के शुरू में स्विट्जरलैंड में भी थे जिसमें उन्होंने महान टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर से मुलाकात की थी।

इस भारतीय ने कहा कि 20 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता से मिलना बहुत ही अद्भुत रहा और इस महान खिलाड़ी ने उन्हें करियर लंबा करने के बारे में भी बताया। चोपड़ा ने कहा, 'बतौर एथलीट, एक महान खिलाड़ी से मिलना शानदार था। मैंने उनसे पूछा कि वह इतने लंबे समय तक खेल में शिखर पर कैसे रहे। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी को अपने कार्यक्रम में संतुलन बनाने की जरूरत है कि उसे किस टूर्नामेंट में खेलना चाहिए। चोटों और थकान से बचने के लिए टूर्नामेंट सतर्कता से चुनने चाहिए।

अभाव से बचने के लिए पाप के आँसू, परभव को ठीक करने के लिए करुणा के आँसू और मोक्ष प्राप्त करने के लिए उपकार के आँसू लाएँ: आचार्य जिनसुंदरसूरीश्वरजी महाराजा

सूरत। कैलाशनगर स्थित रुवई समाज के प्रगति मंडल कार्यालय में तपागच्छाधिपति पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी महाराज की तस्वीर का अनावरण आचार्य जिनसुंदरसूरीश्वरजी महाराज की निश्रा में किया गया, जिसमें रुवई समाज के प्रगति मंडल के पदाधिकारी मौजूद रहे। द्वितीय प्रवचन आचार्य जिनसुंदरसूरीश्वरजी महाराज का प्रवचन नानपुरा बाबुनिवास गली में हुआ एवं तीसरा व्याख्यान श्री आठवालाइन्स जैन संघ के आँगन में प्रवचन प्रभावक पू.आचार्य देव श्री जिनसुंदरसूरीश्वरजी महाराज, अंतरिक्ष तीर्थरक्षकम पू. पं. प्रवर श्री विमलहंस वि.म. साहब के सम्मान में एक सुन्दर धार्मिक सभा का आयोजन किया गया। पूज्य श्री ने कहा कि जब भगवान के पास जाओ तो तीन प्रकार के आंसू लेकर आओ। **1) पाप के आंसू:** हे भगवान, "आप पवित्र हैं और मैं अशुद्ध हूँ", आप निविकारी हैं, मैं एक विकारी हूं, किसी पराई महिला को देखकर मेरे आँखों में विकार पैदा होता है इसलिए मुझे शादी करनी पड़ी पर मैं अपनी पत्नी के प्रति भी वफादार नहीं हूं, हे भगवान! मुझे पाप से बचाओ, "तुम क्रोध रहित हो, मैं अत्यंत क्रोधी हूँ" मेरे क्रोध से मेरी पत्नी-पुत्र-नौकर आदि बहुत पीड़ित हो चुके हैं, लेकिन अब मैं भी पीड़ित हूं, फिर भी यह क्रोध मुझसे चिपक गया है। मुझे छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ जाता है, हे भगवान! आओ मुझे दमनकारी अपराधबोध से बचाएं, ऐसे भाव-प्रार्थनाएं, आंखों से अक्सर दुख के आंसू आते हैं, लेकिन अब पाप के आंसू लाओ और अपराध-मुक्त होने का प्रयास करें।

2) करुणा के आँसू: जब हम प्रभु के पास जाते हैं, तो हमारी आँखों से आँसू निकले बिना नहीं रहना चाहिए, हे प्रभु! आप सभी प्राणियों को खुश करना चाहते थे, आपकी करुणा नरक के प्राणियों को भी बचाने के लिए थी, मेरी करुणा भी आपके जैसी है, ठंडी रात में कुत्ते के भौंकने से मेरी आँखें खुल जाती हैं। मुझे ठंड से बचने के लिए सभी उचित सामान मिल जाता है लेकिन इतनी ठंड में उस कुत्ते का क्या होगा? गरीबों को कम्बल कौन देगा? गर्मी में प्यासे को पानी कौन देगा? भूखों को खाना कौन खिलाएगा? हे भगवान! आप मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं संसार के सभी प्राणियों के कष्ट दूर कर सकूं।

3) उपकार के आंसू: हे भगवान! यदि उन्होंने मुझे दो आंखें-दो हाथ-दो पैर-स्वस्थ शरीर-अच्छा परिवार आदि न दिया होता तो मेरा जीवन जहर बन गया होता। हे भगवान? मैं आपके प्रति आपके सर्वोच्च उपकार को कभी नहीं भूल सकता, ये आपको धन्यवाद देने के लिए मेरे आंसू हैं। यह आपका ही उपकार है कि मैं आपके दर्शन कर सका और एक आखिरी उपकार कर सका कि मुझे इस ऋण से मुक्ति पाने का अवसर मिल सके। संक्षेप में, इश्वर के पास अपना पाप - लोगो की करुणा और इश्वर के उपकार को याद करके आंसू लायें ।

एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाईट में युवक ने डाली यात्रीयों की जान को खतरें में

दिल्ली से सूरत जा रही एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट में एक युवक ने उड़ते विमान के बाथरूम में सिगरेट जला ली। इस घटना से यात्रियों की जान खतरे में पड़ गई। एयर इंडिया एक्सप्रेस के स्टाफ ने युवक के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट I51569 ने 10 अप्रैल को रात 9.45 बजे दिल्ली से सूरत के लिए उड़ान भरी। इस विमान के सीट नं. 28 एफ में कौस्तव सत्यजीत विश्वास नाम का एक युवक बैठा था। आरोप है कि यह युवक सिगरेट और माचिस लेकर चुपचाप विमान में घुस गया। चलती फ्लाइट में बाथरूम में जाकर सिगरेट सुलगाई और सिगरेट पी।

एक अन्य यात्री ने क्रू मेंबर को बताया कि युवक काफी समय से बाथरूम में है। क्रू मेंबर ने बाथरूम खटखटाया। युवक ने दरवाजा खोला तो अंदर से सिगरेट का धुआं निकल रहा था और स्मोकिंग की गंध आ रही थी। जब युवक से पूछताछ की गई तो युवक ने कबूल कर लिया कि उसने बाथरूम में सिगरेट पी थी।

फ्लाइट के सूरत एयरपोर्ट रनवे पर उतरने के बाद क्रू मेंबर ने एयर इंडिया एक्सप्रेस स्टाफ को इसकी जानकारी दी। बाद में एयर इंडिया एक्सप्रेस के स्टाफ ने कोस्तव सत्यजीत बिस्वास नाम के युवक के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसने उड़ते विमान के बाथरूम में धूम्रपान कर यात्रियों की जान को खतरे में डाला था।

यह घटना एयरलाइन सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा है। एयरलाइन कंपनियों को यात्रियों को उड़ान के दौरान धूम्रपान करने से रोकने के लिए कड़े उपाय करने चाहिए।

कपड़ा बाजार में धोखाधड़ी करने वालों को पकड़ने के लिए एसआईटी का गठन किया

सूरत। शहर के कपड़ा बाजार में लंबे समय से धोखाधड़ी कर रहे तथा आर्थिक मामलों में वांछित आरोपियों को पकड़ने के लिए फोस्टा अध्यक्ष कैलास हाकिम की मांग पर राज्य के गृह राज्यमंत्री हर्ष संघवी के आदेश से सूरत पुलिस ने एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है।

यह टीम कपड़ा व्यापारियों के साथ धोखाधड़ी, फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल कर दुकानें ली गई हैं, और उधार माल खरीदकर भुगतान नहीं किया गया है, जैसे मामलों की जांच करेगी। टीम फरार आरोपियों को पकड़ने और उन्हें कानून के कटघरे में लाने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी।

इस विशेष टीम में एक डीसीपी, एक एसीपी, क्राईम ब्रान्च, सलाबतपुरा और ईको सेल से तीन पुलिस इंस्पेक्टर, तीन पुलिस सब-इंस्पेक्टर, पुलिस कांस्टेबल समेत 18 पुलिसकर्मियों की टीम भगोड़े जालसाज को पकड़ने के लिए जांच करेगी।

कपड़ा मार्केट में धोखाधड़ी को लेकर दर्ज अपराधों में वांछित आरोपियों की जानकारी इन्जार्च थाना अधिकारी तैयार करके एसीपी जी.ए.सरवैया को भेजेंगे।

एसीपी सरवैया जानकारी एकत्र कर और वांछित आरोपियों को पकड़ने के लिए कार्रवाई करने के लिए टीम अध्यक्ष के साथ समन्वय में अलग-अलग टीमों का गठन कर फरार आरोपीयों को पकडने का काम करेंगे।

जिन फरार आरोपियों की सी.आर.पी.सी. धारा 70 के अनुसार वारंट जारी नहीं किया है, उन्हें थाना प्रभारी द्वारा जारी किया जाना चाहिए।

फरार आरोपियों के बैंक खाते की जांच की जाएगी।

राज्य के भीतर या राज्य के बाहर आरोपी को गिरफ्तार करने जाते समय विशेष टीम के प्रमुख के माध्यम से आवश्यक अनुमति प्राप्त की जानी चाहिए और टीमों को भेजा जाना चाहिए। वहीं टीमों द्वारा की गई कार्रवाई की जानकारी हर पंद्रह दिन में भेजी जाएगी।

यह पहल कपड़ा व्यापारियों के लिए एक बड़ी राहत होगी और उन्हें न्याय मिलने में मदद मिलेगी।

गणगौर उत्सव का हुआ भव्य आयोजन

सुरत भुमि, सूरत। वीआईपी रोड़ स्थित श्री श्याम मंदिर, सुरतधाम में गुरुवार को श्री श्याम सेवा ट्रस्ट की महिला सदस्यों द्वारा गणगौर उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस मौके पर सुबह से अंजनी हॉल में महिलाओं द्वारा गणगौर का पूजन किया गया। शाम चार बजे से गणगौर उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। शाम पाँच बजे से गणगौर की शाही सवारी निकली गई। इसके पश्चात् मंदिर प्रांगण पर गणगौर का ईकोफ्रैंडली विसर्जन किया गया। श्याम मंदिर पर अनेकों महिलाओं एवं युवतियों द्वारा अपनी-अपनी गणगौर का विसर्जन भी किया गया। इस मौके पर सैंकड़ों महिलाएं मंदिर प्रांगण में उपस्थित रहीं।

एक साल के बाद फिर इसी आदितीर्थ क्षेत्र में सोनगढ़ में कथा गान के लिए मैं आऊंगा : मोरारिबापु

आदितीर्थवासी क्षेत्र से प्रवाहित रामकथा के तीसरे दिन बापू ने कहा हमारे यहां ऋषि मुनियों ने कितना चिंतन किया है।।अहोभाव के लिए ऋषिमुनि आदि तीर्थवासी थे।जो केवल पान और मूल ही खाते थे। फल बहुत कम खाए हैं,मूल खाये हैं इसलिए ऋषियों की बातों में मूल तत्व मिलते हैं।। युगों पहले वन में बसे हुए,न स्वर्ग की कामना,ना मोक्ष,रिद्धि सिद्धि की कामना,न कोई स्वार्थ सिद्धि की कामना, वह बोलते थे-असदो मा सद्गमय..मृत्योर्मा अमृतम् गमय.. हमें मृत्यु से दूर अमृत की तरफ ले जाओ। हमें सत्य की तरफ ले जाओ।। ऐसे सांठ संवत्सर की बात करते हुए बापू ने कहा की प्रमोद संवत्सर है।। जहां एक मकान के आसपास 300से ज्यादा जीव आनंद से बसते हैं उसी मकान में हम दो-तीन लोग प्रमोद से क्यों नहीं रह पाते! कहां रहना चाहिए ?-

जहां बहुत ज्यादा भीड़ न हो।जहां शब्दों के आडंबर ना हो। जहां संबंधों का बंधन और मजबूरी ना हो। और जहां महत्वाकांक्षी जाल ना बिछाइ हो वहां रहना।।

तेरी मुश्किल में काम आउं,ना आउं
एक आवाज लगा देना,अच्छा लगेगा!

पुरुष सूक्त का भाष्य करते हुए प्रज्ञावन शायनाचार्य ने 21 प्रकार के समिध की बात की है।। वहां तीन सप्त-सात का तीन गुना-21 समिध की बात कही है हमारे यहां यज्ञ में सात समिध की बात होती है।। रामचरितमानस में भी अध्यात्म रूप दिखाया है वहां भी सात समिध बताए हैं।।

जब मैं दादा से रामायण पढ़ता था एक बार मैंने पूछा था।तब हम गांव के छोटे मकान की दीवार में लिंपन करते थे। मिट्टी से दीवारों पर निंपन करते थे फिर वहां कुछ लिखना था। मैंने दादा से कहा की चौपाई कौन सी लिखूं? तब दादा ने मुझे बताया था यह तुलसी की सात बात कही-

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंद।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड।।

झूठ रास्ते से दूर रहे। दुष्ट तर्क ना करें। झूठी चाल ना चले।कलयुग के दुर्गम रास्ते पर ना चलें। कपट ना करें। जो हम है नहीं ऐसा दिखावा न करें यह बात कही गई है।।

सायनाचार्य ने जब पुरुषसूक्त का भाष्य लिखा तो वहां 21समिध की बातें करते हुए लिखा।। 12 महीने एक संवत्सर।।जो 12 महीने का है। वह समिध है।।यह भी बताया छे नहीं पांच ऋतु है। क्योंकि वर्षाऋतु और शरदऋतु एक समान है। तीन लोक-ब्रह्मलोक, पृथ्वीलोक और पाताललोक जिसे में सत्य प्रेम और करुणालोक कहता हूं। वह भी समिध है और एक आदित्य सूर्य को भी समिध कहा वह भी कभी ना कभी स्वाहा हो जाएगा।। इस सब को मिलते हैं तो 21 समिध होते हैं।।

बापू ने यह भी बताया कि एक साल के बाद फिर इसी आदितीर्थ क्षेत्र में सोनगढ़ में कथा गान के लिए मैं आऊंगा।।

नींबू के दाम आसमान छू रहे हैं, 100 रुपये से बढ़कर 150 रुपये प्रति किलो हो गए

सूरत में गर्मी के मौसम में नींबू की मांग बढ़ने के साथ ही इसकी कीमतों में भी उछाल देखने को मिल रहा है। आंध्र प्रदेश-कर्नाटक में बेमौसम बारिश के कारण सूरत एपीएमसी में नींबू की आय घटने से नींबू की कीमत अब 100 रुपये से बढ़कर 150 रुपये प्रति किलो हो गई है।

बाजार में नींबू की कीमत गुणवत्ता के आधार पर 1400 से 2300 प्रति मन (20 किलो) तक होती है। एक सप्ताह पहले, रमज़ान के पीक सीज़न के दौरान, खुदरा कीमतों में 200 रुपये तक की वृद्धि देखी गई थी। शहर के सबसे पुराने हिस्से, नवसारी बाज़ार में कीमत रुपये 120 प्रतिकिलो हैं। सैयदपुरा और कॉट्सफिल-गोलवाड के निकट बाजार में 120 और अडाजण संस्कार भारती स्कूल के पास बाजार में गुणवत्ता के आधार पर 130 से 140 रुपये तक देखा गया। जबकि सौराष्ट्र के आबादी वाले क्षेत्रों जैसे वराछा और कटारगाम में भी रुपये 120 से लेकर 130 किलो तक के दाम पर बिके नींबू ।

कम आमदनी का मुख्य कारण पिछले कुछ दिनों में देशभर के विभिन्न राज्यों में हुई बेमौसम बारिश को माना जा रहा है। नींबू की आय के प्रमुक क्षेत्र आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और सौराष्ट्र में नींबू के फूल के समय बेमौसम बारिश से प्रभावित हुए ।पुरुषों द्वारा अधिकाधिक कार्य लेने के बावजूद, कई महिलाओं के लिए घरेलू जिम्मेदारियों का मानसिक बोझ अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है और ऐसे घरों को घरेलू सहायता की जरुरत हैं।

रामदेव बाबा सॉल्वेंट लिमिटेड का आईपीओ 15 अप्रैल 2024 को खुलेगा

मुंबई। रिफाइंड राइसब्रान तेल के निर्माता और वितरक, रामदेवबाबा सॉल्वेंट लिमिटेड, जिसका मुख्यालय नागपुर में है, ने 15 अप्रैल, 2024 को आरंभिक सार्वजनिक पेशकश के साथ सार्वजनिक होने की अपनी योजना की घोषणा की है। कंपनी का लक्ष्य एनएसई पर सूचीबद्ध होने के लिए आईपीओ के माध्यम से रू 50.27 करोड़ जुटाने का है।

आईपीओ से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग नई विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना, हमारे कुछ बकाया उधारों के पूर्ण या आंशिक पुनर्भुगतान, कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं और सामान्य कॉर्पोरेट खर्चों के लिए किया जाएगा। एंकर निवेशकों के लिए बोली अप्रैल को खुलेगी। 12, 2024, यह इश्यू 15 अप्रैल, 2024 को खुलेगा और 18 अप्रैल, 2024 को बंद होगा। इश्यू के लिए बुक रनिंग लीड मैनेजर चॉइस कैपिटल एडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड है। इश्यू का रजिस्ट्रार बिगशेयर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड है।

रामदेव बाबा सॉल्वेंट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, श्री नीलेश सुरेश मोहता ने कहा, "हमें आईपीओ की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है, जो हमारी विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह निर्णय हमारी कंपनी की क्षमताओं में हमारे विश्वास और नई चीजों को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।" विस्तार के अवसर। हमारी रणनीतिक रूप से स्थित विनिर्माण सुविधाएं, और सावधानीपूर्वक प्रबंधित गुणवत्ता नियंत्रण, हमें बढ़ी हुई दृश्यता और बाजार में उपस्थिति के लिए अच्छी स्थिति में रखते हैं, जैसे ही हम इस नए अध्याय की शुरुआत करते हैं, हम अपने उद्योग में विकास और नवाचार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार हैं।

यह आईपीओ न केवल हमारी कॉर्पोरेट स्थिति को बढ़ाएगा बल्कि रामदेव बाबा सॉल्वेंट लिमिटेड की ब्रांड पहचान को भी बढ़ाएगा। इसके अतिरिक्त, ऋण चुकौती से हमारी बैलेंस शीट मजबूत होगी। हमें उम्मीद है कि इन पहलों से कई लाभ होंगे, मूल्य बढ़ेगा और हमारी समग्र स्थिति मजबूत होगी।

एशियन पेंट्स ने "नियो भारत लेटेक्स पेंट" की अपनी क्रांतिकारी पेशकश के लिए विराट कोहली को ब्रांड एंबेसडर बनाया है

नेशनल। एशियन पेंट्स, भारत की अग्रणी पेंट और सजावट कंपनी, गर्व से क्रिकेट आइकन, विराट कोहली को अपने आगामी नए लॉन्च - नियो भारत लेटेक्स पेंट के ब्रांड एंबेसडर के रूप में शामिल करने की घोषणा करती है।

नियो भारत लेटेक्स पेंट के माध्यम से एशियन पेंट्स इस गतिशील उद्योग में अपने पदचिह्न का विस्तार करके और इसे सभी के लिए अधिक सुलभ बनाकर पेंट श्रेणी में क्रांति लाएगा। नियो भारत लेटेक्स पेंट हर तरह से क्रांतिकारी है क्योंकि यह एक विशेष पॉलिमर तकनीक से लैस है जो बेहतर फिनिशिंग, उच्च कवरेज और बेहतर धोने की क्षमता प्रदान करता है। नियो इंडिया की टैग लाइन है - च्प्रगति के रंगज्, और यह उन लाखों भारतीयों के लिए एक गान बन गया है जो बेहतर जीवन के लिए प्रयास कर रहे हैं, और एशियन पेंट्स का लक्ष्य इस यात्रा में उनका भागीदार बनना है।

एशियन पेंट्स बाजार में अग्रणी रही है, जो लगातार मानकों को फिर से परिभाषित करने वाले नवीन उत्पाद पेश कर रही है, और नियो भारत लेटेक्स पेंट एक बार फिर इस श्रेणी में क्रांति लाने के लिए तैयार है।

इस महत्वपूर्ण लॉन्च के साथ न्याय करने के लिए विराट कोहली से बेहतर कौन हो सकता है? विराट ब्रांड के मूल्यों और जुनून का प्रतीक हैं जो एशियन पेंट्स के नेतृत्व और उत्कृष्टता और प्रदर्शन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो उन्हें एशियन पेंट्स और इनोवेटिव नियो भारत लेटेक्स पेंट दोनों के लिए एक आदर्श चेहरा बनाता है।

आगामी लॉन्च और इसके ब्रांड एंबेसडर के बारे में अपना उत्साह व्यक्त करते हुए, एशियन पेंट्स लिमिटेड के एमडी और सीईओ, अमित सिंघल ने कहा, "हमारा आगामी लॉन्च, नियो भारत लेटेक्स पेंट, एशियन पेंट्स के इतिहास में सबसे बड़े क्षणों में से एक है, और एक विघटनकारी है। प्रतिस्पर्धियों के लिए ब्रांड। चेहरे के रूप में विराट कोहली ने हमारे उत्साह को बढ़ाया। आज कोहली को खेल और भारतीय टीम को इस तरह से बदलने का श्रेय दिया जाता है कि उनकी लोकप्रियता सभी क्षेत्रों में फैली हुई है, उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास झलकता है नया भारत। जनता के साथ कोहली का प्रभाव और प्रतिध्वनि इस क्रांतिकारी उत्पाद के साथ पूरी तरह मेल खाती है। नियो भारत न केवल पेंट श्रेणी को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है, बल्कि भारत में उद्योग के विकास को भी तेज करने के लिए तैयार है। हम एशियन पेंट्स परिवार में विराट कोहली का स्वागत करते हैं और उसके साथ जुड़ें। साथ में इस यात्रा का इंतजार कर रहे हैं।"

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)